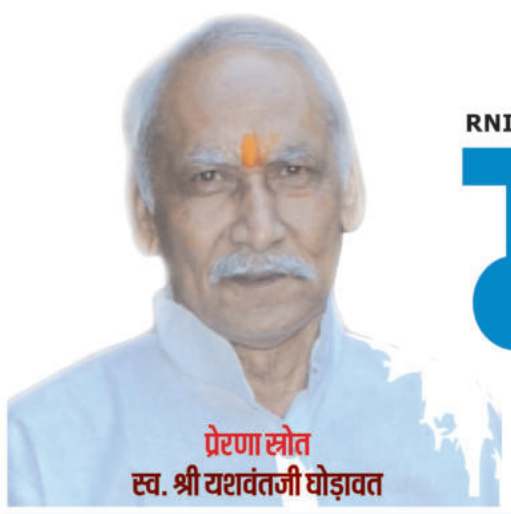

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

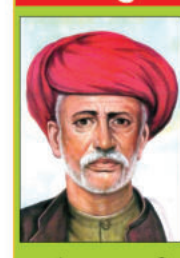

यह संसार सोए हुए लोगों की भीड़ है, और सोए हुए लोग जागे हुए आदमी को बर्दास्त नहीं करते।

ज्योतिबा फुले

वर्ष-06, अंक - 09 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 23 नवम्बर 2023 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

लाडली बहना का दुलारा... या सत्ता परिवर्तन की झंकार...?

माही की गूंज। संजय भटेवरा

झाबुआ। दीपावली और मतदान एक हफ्ते के अंदर रहने से इस बार चुनाव प्रचार का अपेक्षित माहौल नहीं बन पाया। यही नहीं इस बार पुरे प्रचार के दौरान खामोश मतदाता राजनीतिक दलों की धड़कन बढ़ाते रहे। पहली बार विधानसभा चुनाव इतनी खामोशी से निपटे की राजनीति के धुरंधर पंडित भी आकलन लगाने की स्थिति में नहीं है। इस बार आम मतदाताओं में न तो सत्ता विरोधी लहर देखने को मिली न ही विपक्षी के प्रति सहानुभूति नजर आई। खामोश मतदाता ने लंबी-लंबी लाइन लगाकर मतदान अवश्य किया है जिससे दोनों ही राजनीतिक दल अपना मान रहे हैं और यह अपना वोट कितना अपना होता है यह तो 3 दिसंबर को ही पता लग पाएगा।

जिले में 2 तारीख तक 25 विधायक

विधायक के लिए मतदान तो हो चूका है और मतों की गिनती में अभी 10 दिन बाकी है तब तक चुनाव लड़ने वाला प्रत्येक उम्मीद्वार अपने आप को विजयी उम्मीद्वार मान सकते है। इस हिसाब से झाबुआ जिले में विधायक का चुनाव लड़ने वाले सभी 25 प्रत्याशी अपने आप को 2 दिसंबर तक तो विधायक मान ही सकते हैं। जबकि 3 दिसंबर को असली तीन विधायकों के नाम आम जनता के सामने आ जाएंगे।

कमलनाथ के वचन बनाम मोदी की गारंटी

पूरे विधानसभा चुनाव में प्रचार के दौरान एक बात देखने को मिली कि, अब तक हुए चुनाव में कांग्रेस सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ती रही है। कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित करने की परंपरा नहीं रही। जबकि भाजपा अधिकांश चुनाव अपने मुख्यमंत्री के चेहरे को आगे रखकर लड़ती रही है। जिस पर भाजपा हमेशा चुटकी लेती रहती थी कि, कांग्रेस पार्टी में बिना दूल्हे की बारात है, दूल्हे का अता-पता नहीं है, लेकिन इस बार ठीक इसके उलट हो गया है। कांग्रेस में तो दूल्हा तय दिखाई दिया लेकिन भाजपा ने शिवराज सिंह चौहान के चेहरे को आगे रखने से परहेज किया। जबकि शिवराज सिंह चौहान पिछले कई वर्षों से प्रदेश की कमान संभाले हुए हैं। पूरे प्रचार के दौरान भले ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सबसे ज्यादा (लगभग 160) सभा की लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा कमलनाथ के वचन और मोदी की गारंटी की ही रही और कहीं न कहीं प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी में आम लोगों ने कमलनाथ के वचन पर ज्यादा विश्वास जताया है, ऐसा आकलन किया जा रहा है। यही नहीं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की मुख्य योजना 'लाडली बहना योजना' को गेम चेंजर बताया जा रहा है, यह कितना चेंज कर पाती है यह तो समय ही बताएगा। लेकिन इतना तो तय है की लाडली बहन ही यह तय करेगी की बंपर वोटिंग लाडली बहना का शिवराज के प्रति दुलार है या यह सत्ता परिवर्तन की झंकार है।

झाबुआ जिले के संदर्भ में देखे तो भाजपा की ओर से यहां प्रचार के लिए स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल आए। वहीं स्थानीय प्रत्याशियों की मदद के लिए गुजरात से भी कई कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि आए। लेकिन कांग्रेस की बात करें तो वो ज्यादातर समय अपने प्रत्याशी के भरोसे ही रही। एक बार पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने जरूर तीनों विधानसभा में एक-एक सभा की, इसके अलावा कोई अन्य बड़ा नेता नहीं आया। कांग्रेस के चुनाव समिति के चेयरमेन अपने बेटे की विधानसभा में इतने उलझ गए की वे झाबुआ को छोड़कर प्रदेश में तो ठीक वरन जिले की दो अन्य सीट पेटलावद और थांदला में भी नजर नहीं आए। पूरे चुनाव प्रचार में प्रत्याशी जनसंपर्क और खाटला बैठक तक ही सीमित नजर आए। स्थानीय प्रत्याशी भी स्थानीय समस्याओं से ज्यादा कमलनाथ के वचन दोहराकर अपने लिए व कांग्रेस के लिए वोट मांगते नजर आए। वहीं भाजपा प्रत्याशी, प्रदेश सरकार के कार्यों, योजनाओं और मोदी की गारंटी के नाम पर वोट मांगते नजर आए। अब देखना ये है कि, आम जनता ने मोदी की गारंटी या कमलनाथ के वचन किस पर ज्यादा भरोसा किया है।

नए युद्धपोत से हुई ब्रम्होस की टेसिंटग, लगा सटीक निशाना

नई दिल्ली। समुद्र में भारत की ताकत बेमिसाल होने वाली है। समुद्र में अपनी पहली ब्रह्मोस फायरिंग में, भारतीय नौसेना के नए स्वदेशी गाइडेड मिसाइल विध्वंसक यार्ड 12706 ने बुधवार को 'बुल्स आई' स्कोर किया। यानी इस जहाज से मिसाइल ने बेहद सटीक निशाना लगाया है। दरअसल भारतीय नौसेना ने पहली बार सेना में शामिल होने से पहले किसी युद्धपोत से मिसाइल दागी है। इस युद्धपोत का नाम विशाखापट्टनम क्लास स्वदेशी गाइडेड मिसाइल डेस्ट्रॉयर आईएनएस इंफाल है। कमीशन किए जाने से पहले किसी युद्धपोत द्वारा लंबी दूरी वाली ब्रह्मोस मिसाइल का यह पहला परीक्षण था।

इंफाल भारतीय नौसेना के विशाखापत्तनम श्रेणी के स्टील्थ-गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का तीसरा जहाज है। यह स्वदेशी जहाज बनाने में भारत की काबिलियत का उदाहरण है और दुनिया के सबसे तकनीकी रूप से एडवांस युद्धपोतों में से एक है। इसे भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो (डब्ल्यूडीबी) द्वारा डिजाइन किया गया है और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई द्वारा निर्मित किया गया है।

इंफाल नाम द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इंफाल की लड़ाई में लड़ने वाले भारतीय सैनिकों की याद में दिया गया है। यह अत्याधुनिक हथियारों और सेंसरों से सुसज्जित एक शक्तिशाली और बहुमुखी शिप है। विध्वंसक की कुल लंबाई 164 मीटर और वजन 7 हजार 400 टन है। बयान में कहा गया कि ऐसे अभ्यास से नौसेना संदेश देना चाहती है कि किसी भी हालात में लड़ाई के लिए नौसेना तैयार है।

जहाज का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा स्वदेशी सामान से सुसज्जित है जिसमें मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें (बीईएल, बैंगलोर), सतह से सतह पर मार करने वाली ब्रह्मोस मिसाइलें (ब्रह्मोस एयरोस्पेस, नई दिल्ली), स्वदेशी टारपीडो ट्यूब लॉन्चर (लार्सन और टुब्रो, मुंबई), पनडुब्बी रोधी स्वदेशी रॉकेट लॉन्चर (लार्सन एंड टुब्रो, मुंबई) और 76 मिमी सुपर रैपिड गन माउंट (बीएचईएल, हरिद्वार) शामिल हैं।

ईडी, शक्तियों के इशारे पर काम कर रही है- कपिल सिब्बल

नई दिल्ली, एजेंसी।

राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने बुधवार को नेशनल हेराल्ड अखबार की संपत्ति जब्त करने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की आलोचना की। उन्होंने नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी की कार्रवाई को ÷राजनीति में नया निचला स्तर÷ बताया। कांग्रेस के पूर्व नेता सिब्बल ने यह भी आरोप लगाया कि जांच एजेंसी ÷शक्तियों÷ के इशारे पर काम कर रही है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को कहा था कि, उसने नेशनल हेराल्ड अखबार और उससे जुड़ी कंपनियों के खिलाफ चल रही मनी लॉन्ड्रिंग जांच के तहत लगभग 752 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति और इक्विटी शेयर जब्त किए हैं। अस्थायी कुर्की आदेश तब आया जब पांच राज्यों छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में चुनाव चल रहे हैं और वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होने वाली है। एक्स पर एक पोस्ट में सिब्बल ने कहा, ÷यंग इंडियन (वाईआई), एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल), ईडी ने एजेएल की 752 करोड़ की संपत्ति कुर्क की है।

वरिष्ठ वकील सिब्बल ने कहा, जब अज्ञानता आनंद है, तो बुद्धिमान होना मूर्खता है। मुझे नहीं लगता कि ईडी को कानून के बारे में अनभिज्ञ होना चाहिए। एक शेयरधारक एक शेयरधारक होता है, संपत्ति का स्वामित्व कंपनी के पास होता है। उन्होंने कहा, अगर कंपनी परिसमापन में चली जाती है...शेयरधारक को कुछ नहीं मिलता है। तो किसने किसे धोखा दिया है? विश्वास का उल्लंघन कहां है? किसने साजिश रची? मुझे लगता है कि वे कानून जानते हैं। मुझे लगता है कि अदालतें भी कानून जानती हैं। इसलिए मैं मैं थोड़ा चकित हूं।

सिब्बल ने कहा, आज देश में जो हुआ है वह यह है कि ईडी सत्ता के निर्देशों पर काम कर रही है। दूसरी बात जो अधिक महत्वपूर्ण है वह यह है कि यह धारा 25 कंपनी है, यह लाभ के लिए नहीं है। यदि एजीएल बंद हो जाती है, तो यह किसी अन्य गैर-लाभकारी कंपनी के पास चली जाएगी। यंग इंडिया किसी अन्य गैर-लाभकारी कंपनी के पास चली जाएगी।

पाक की नापाक साजिश फिर हुई बेनकाब

मृतसर, एजेंसी। पाकिस्तान की नापाक साजिश एक बार फिर बेनकाब हुई है। बीएसएफ ने अटारी-वाघा बार्डर के पास पाकिस्तानी ड्रोन द्वारा फेंकी गई करोड़ों रुपयों की हेरोइन बरामद की है। यहां एक खेत से 5.2 किलो हेरोइन बरामद हुई है। बताया जा रहा है कि हेरोइन काले रंग के एक बैग में पैक थी। ड्रोन वापस जाने में कामयाब रहा।

अमृतसर में एसएसपी सतिंदर सिंह ने कहा कि एक गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए डीएसपी अटारी गुरिंदरपाल सिंह नागरा के नेतृत्व में एक पुलिस टीम का तत्काल गठन किया गया और अटारी गांव के पास बीएसएफ टीम के साथ एक संयुक्त तलाशी अभियान शुरू किया गया था।

एसएसपी ने कहा, तलाशी अभियान के दौरान, हेरोइन के पांच पैकेट बरामद किए गए। ऐसा प्रतीत होता है कि हेरोइन की तस्करी पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए की गई थी। हमारी टीमें मामले में जांच कर रही है। जल्द ही इस मामले में और भी खुलासे किए जाएंगे। बरामद हेरोइन एक खेत से काले रंग के बैग में मिली है। नागरा ने कहा कि, उन्होंने कुछ अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ घरिंडा पुलिस स्टेशन में एनडीपीएस अधिनियम और एयर क्राफ्ट अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। बीएसएफ प्रवक्ता के मुताबिक, बुधवार सुबह करीब साढ़े 8 बजे प्रतिबंधित सामग्री जब्त की गई। सूत्रों ने कहा कि जिस ड्रोन ने खेप गिराई थी, वह प्रतिबंधित सामग्री की तस्करी के बाद वापस जाने में कामयाब रहा।

हिंदू बच्चों को खिलाया जा रहा बीफ...?

बेंगलुरु। एनसीपीसीआर यानी राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के निरीक्षण में कर्नाटक की एक मिशनरी संस्था में हैरान करने वाली बातें सामने आई हैं। दावा किया जा रहा है कि संस्था में 'गौ मांस' पकाया जा रहा है। फिलहाल, आयोग ने आगे की कार्रवाई के लिए नोटिस जारी कर दिया है। कुछ दिनों पहले भी आयोग ने कर्नाटक के ही एक यतीमखाने का औचक निरीक्षण किया था।

संस्था में पकाया जा रहा है बीफ

आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो का कहना है कि जांच के दौरान एनसीपीसीआर को 'संदिग्ध मांस' मिला है। उन्होंने माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, कर्नाटक के दावणगिरे में डॉनबॉस्को मिशनरी संस्था द्वारा संचालित बच्चों के आश्रय गृह ओपन शेल्टर में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की टीम को निरीक्षण के दौरान किचन में संदिग्ध मांस मिला। उन्होंने जानकारी दी कि, आयोग को जांच के दौरान कचरे से 'बीफ (गौमांस) का बिल' भी मिला है। उन्होंने बिल की तस्वीर भी साझा की है।

संस्था में हिंदू बच्चे भी

आयोग अध्यक्ष ने जानकारी दी है कि संस्था में रहने वालों में बड़ी संख्या में हिंदू बच्चे हैं। कानूनगो ने बताया, होम में बड़ी संख्या हिंदू बच्चों की है इसके बावजूद सभी बच्चों से ईसाई धर्म की प्रैक्टिस करवाई जा रही है तथा गौ मांस पकाया जा रहा है। आवश्यक कार्रवाई हेतु नोटिस जारी किया जा रहा है।

यतीमखाने पर पहुंचा एनसीपीसीआर

कुछ दिनों पहले ही कानूनगो राजधानी बेंगलुरु के दारूल उलूम सैय्यादिया यतीम खाना पहुंचे थे। उन्होंने बताया था कि यहां सैकड़ों बच्चे खराब स्थिति में रह रहे हैं। उन्होंने बताया कि करीब 200 बच्चे मस्जिद में ही रहते हैं और उन्हें स्कूल भी नहीं भेजा जाता। साथ ही उन्हें मनोरंजन या खेल का कोई जरिया भी मुहैया नहीं कराया गया है।

उन्होंने जानकारी दी थी, यहां करीब 200 यतीम (अनाथ) बच्चों को रखा गया है। 100 वर्गफुट के कमरे में 8 बच्चों का रखा जाता है, ऐसे 5 कमरों में 40 बच्चे रहते हैं व कॉरिडोर में 16 बच्चे रहते हैं। 150 बच्चे मस्जिद के नमाज पढ़ने वाले 2 अलग अलग हाल में ही रात को सोते हैं। सभी 200 बच्चे दिन भर इन्हीं नमाज वाले हाल में मदरसा की इस्लामिक दीनी तालीम पढ़ते हैं। किसी भी बच्चे को स्कूल नहीं भेजा जाता है।

रैंकिंग में राजधानी बनी दुनियां का सबसे प्रदूषित शहर

नई दिल्ली, एजेंसी।

भारत समेत दुनिया के अलग-अलग शहरों में लोगों को वायु प्रदूषण की वजह से सांस लेने में तकलीफ का सामना कर रहा है। दुनिया के सबसे प्रदूषित 110 देशों की सूची में भारत के 3 शहर हैं। जिसमें राजधानी दिल्ली, कोलकाता और मुंबई है। स्विस फर्म आईक्यूएयर की लाइव रैंकिंग में 22 नवंबर को राजधानी दिल्ली पहले नंबर पर है। आईक्यूएयर की लाइव रैंकिंग देखने से पता चलता है कि 254 एक्यूआई के साथ दिल्ली पूरी दुनिया में सबसे प्रदूषित शहर है।

इसके बाद रैंकिंग में चौथे स्थान पर 216 एक्यूआई के साथ कोलकाता शहर है। इसके बाद दसवें स्थान पर मुंबई का नंबर आता है, जहां एक्यूआई 155 रिकॉर्ड किया गया। लआईक्यूएयर की लाइव रैंकिंग में बांग्लादेश का ढाका शहर पांचवें स्थान पर है, जहां एक्यूआई 188 है। इसके बाद दूसरे और तीसरे स्थान पर पाकिस्तान के दो शहर कराची और लाहौर है। कराची का एक्यूआई 230 है और लाहौर का एक्यूआई 222 दर्ज किया गया। वहीं, आईक्यूएयर की वर्ल्ड लाइव रैंकिंग में छठवें स्थान पर वियतनाम की राजधानी हनोई है। यहां का एक्यूआई लेवल 183 है। रैंकिंग में सातवें स्थान पर संयुक्त अरब अमीरात देश का दुबई शहर है। यहां का एक्यूआई लेवल 176 है।

गलत हैं तो एक हजार करोड़ का फाइन लगाओ और हमें फांसी दो- बाबा रामदेव

हरिद्वार।

एलोपैथी पर निशाना साधने और अपनी दवाओं के बारे में गलत दावे करने के आरोपों पर सुप्रीम कोर्ट ने बाबा रामदेव की कंपनी पतंजलि को नसीहत दी थी। यही नहीं अदालत ने कहा था कि यदि रोगों को ठीक करने का आपके प्रोडक्ट्स का दावा गलत पाया गया तो 100 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया जाएगा। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की अर्जी पर अदालत ने यह तीखी टिप्पणी की थी। अब इस पर बाबा रामदेव का जवाब आया है। उन्होंने बुधवार को हरिद्वार में कहा कि यदि हम गलत पाए जाते हैं तो हमारे ऊपर 100 नहीं बल्कि 1000 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया जाए। यहां तक कि हमें फांसी की भी सजा दी जाए।

बाबा रामदेव ने कहा, मीडिया के हजारों साइट्स में एक खबर को वायरल किया जा रहा है कि सुप्रीम कोर्ट ने पतंजलि को फटकार लगाई कि झूठा प्रोपेगेंडा करोगे तो करोड़ों लोगों का जुर्माना लगेगा। हम सुप्रीम कोर्ट, देश के संविधान का आदर करते हैं। लेकिन झूठा प्रोपेगेंडा हम नहीं कर रहे। डॉक्टरों के एक ऐसे गिरोह ने ऐसी संस्था बना रखी है कि वे प्रचार करते हैं। वे हमारी संस्कृति और सनातन मूल्यों के खिलाफ भी बोलते हैं। उनका झूठा प्रचार है कि बीपी, शुगर, थायराइड और लीवर जैसी बीमारियों का कोई इलाज नहीं है। लेकिन हमारे पास हजारों मरीज आते हैं। हमारे पास उन पर ही जो किया गया है, उसके ही सबूत है। हम तो एक सप्ताह के अंदर 12 से 15 किलो तक का वजन कम कर देते हैं।

पतंजलि के मुखिया ने कहा कि यदि हम झूठ नहीं बोल रहे हैं तो फिर हमारे खिलाफ कैसा जुर्माना? यह तो उन पर लगना चाहिए, जो झूठ बोल रहे हैं और गलत प्रचार करते हैं। बाबा रामदेव ने कहा कि बीते 5 सालों से खतरनाक प्रोपेगेंडा चल रहा है। उन्होंने कहा कि योग, आयुर्वेद और नेचुरोपैथी को झुठलाने के लिए यह प्रचार चल रहा है कि आयुर्वेद में किसी भी चीज का इलाज नहीं है। दरअसल बाबा रामदेव के खिलाफ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने अर्जी दाखिल की थी।

इसी पर सुनवाई करते हुए अदालत की बेंच ने पतंजलि को झूठे प्रचार से बचने की नसीहत दी थी। बता दें कि कोरोना काल से ही पतंजलि और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के बीच विवाद चल रहा है। बाबा रामदेव के कई बयानों को लेकर मेडिकल एसोसिएशन उखड़ गया था। यही नहीं एलोपैथी के अपमान का आरोप लगाया था। आयुर्वेद बनाम एलोपैथी की यह बहस लंबी चली तो मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया।

सहस्त्रबाहु जन्मोत्सव पांच दिवसीय शतचंडी महायज्ञ के साथ धूमधाम से मनाया गया

हरभक्त के मन में है सहस्त्रबाहु अर्जुन भगवान-अर्चना जयसवाल

शिक्षा ही जीवन का आधार, जो करती है सबके सपनो को साकार-साक्षी शिवहरे व रिंपल राय

माही की गूंज, झाबुआ।

मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ-अलीराजपुर द्वारा आराध्य देव राजराजेश्वर भगवान सहस्त्रबाहू अर्जुन जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में पांच दिवसीय हवनात्मक शतचंडी नवकुंडी महायज्ञ मेवाड़ा कलाल समाज मांगलिक भवन मिंडल झाबुआ में आयोजित किया गया। मेवाड़ा कलाल समाज के अध्यक्ष दाड़मचंद लोदवाला ने जानकारी देते हो बताया कि, 15 नवंबर से प्रारंभ हुआ हवानात्मक शतचंडी महायज्ञ कार्यक्रम 19 नवंबर को 1 लाख 11 हजार आहुति कर पूर्णाआहुति के साथ, पूर्ण विधि विधान से यज्ञ कर पंडित विश्वनाथ शुक्ला झाबुआ के मुखारविंद से मंत्रोउचार के साथ रविवार को पूर्ण हुआ । इस यज्ञ में मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ-अलीराजपुर के कुल 18 यजमान सपत्निक यज्ञ के लाभार्थी रहे।

सहस्त्रबाहु अर्जुन जन्मोत्सव में 5 दिनों तक अलग-अलग आयोजन हुए

समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष धन्नालाल बसेर एवं ट्रस्ट के कार्यवाहक अध्यक्ष चंदूलाल पडियार ने जानकारी देते हुए बताया कि, प्रथम दिवस में शतचंडी यज्ञ प्रायश्चित कर्म दशा विधि स्नान हिमाद्री व दीपावली मिलन समारोह के साथ चेयर रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई ।द्वितीय दिवस गंगाजल भर के विधिविधान से यज्ञमंडप में प्रवेश के साथ रंगोली व मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

तृतीय दिवस नित्य पूजन हवन एवं शाम को सिद्धेश्वर रामायण मंडल काकनवानी द्वारा सुंदरकांड का शानदार आयोजन किया गया। चतुर्थ दिवस नित्य पूजन हवन के साथ शाम को भगवान सहस्त्रबाहु अर्जुन भगवान के जन्म उत्सव में निशान यात्रा दो पहिया वाहन रैली का आयोजन शनिवार को झाबुआ नगर के मुख्य मार्ग पर शोभा यात्रा के रूप में किया गया। देर शाम को आदिशक्ति मां जगदंबा की आराधना में मेवाड़ा कलाल समाज की महिला मंडल ने डांडिया प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें 11 से अधिक महिलाओं को बेस्ट डांडिया अवार्ड से कलाल समाज की डांडिया निर्णायक जज भगवती नाडोल गुजरात व राजकुमारी कलाल दाहोद ने प्रतिभागियों को अवार्ड से सम्मानित किया।पंचम दिवस रविवार को उत्तर पूजन व पूर्णाहुति के साथ कलाल समाज के आराध्यदेव भगवान सहस्त्रबाहू अर्जुन के जन्मोत्सव के उपलक्ष में प्रतिभा सम्मान मंचीय आयोजन आयोजित किया गया। समाज के इस विशाल आयोजन में दिनेश मोहनलाल सोलंकी थांदला द्वारा उनके काका श्री स्वर्गीय नारायणलाल जी झालोद वालों की स्मृति में पांच दिवसी महाभोजन प्रसादी की व्यवस्था आयोजन के मुख्य भामाशाह बन कर की गई।

अखिल भारतीय स्तर के पदाधिकारी विशेष रूप से रहे उपस्थित

भगवान सहस्त्रबाहु अर्जुन के जन्मोत्सव व प्रतिभा सम्मान में अखिल भारतीय स्तर के समाजसेवी विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। समाज के सचिव एजनलाल भानपुरिया, सहसचिव अंकित सोंलकी व ट्रस्ट के सचिव जीवनलाल पडियार ने जानकारी देते हुए बताया कि, पूज्यपात महंत दयाराम दास जी महाराज सिद्धपीठ हनुमत आश्रम पीपलखुटा, मुंबई से फिल्म डायरेक्टर मुकेश आर. चौकसे, फिल्मी कलाकार सुश्री प्रीति चौकसे,नेशनल न्यूज़ चैनल की एंकर नोएडा नई दिल्ली से इंदौर की बेटी सुश्री साक्षी शिवहरे,आधार कार्ड के जनक सुनील जायसवाल इंदौर, मिस इंडिया दिवा अवार्ड की फस्ट विनर सुश्री रिंपल राय मुंबई, ,राजस्थान कलाल समाज के प्रदेश अध्यक्ष कन्हैयालाल पारेता कोटा, ,अखिल भारतीय सर्ववर्गीय जायसवाल महासभा संयोजक अर्चना जायसवाल इंदौर, भारतीय जायसवाल, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक जायसवाल इंदौर, सर्ववर्गीय जयसवाल समाज के प्रदेश अध्यक्ष राकेश राय सीहोर, मेवाड़ा पोरवाल कलाल समाज के अध्यक्ष श्रीमान धन्नालाल पोरवाल उज्जैन, महेंद्र जायसवाल भारती कलचुरि एकता रतलाम , मनोज जायसवाल जिला अध्यक्ष सहित सूरज जायसवाल ,सचिन चौकसे प्रभु चौकसे, कुशलगढ़ परिक्षेत्र से वरिष्ठ समाजसेवी सुरेश पडियार, उपाध्यक्ष राजेश सोलंकी, बांसवाड़ा कलाल समाज के पूर्व अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय स्तर के ट्रस्टी हरीश पटेल सेनावासा, मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ ट्रस्ट अध्यक्ष शांतिलाल पडियार एवं मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ-आलीराजपुर परिक्षेत्र के अध्यक्ष दाड़मचंद लोदावला आयोजन में विशेष अतिथि रहे। उपस्थित मंचासीन अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम भगवान सहस्त्रबाहु अर्जुन की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन करके विधि विधान से पूजा की गई। स्वागत भाषण मेवाड़ा कलाल समाज के अध्यक्ष दाड़मचंद ने दिया। मेवाड़ा कलाल समाज मांगलिक भवन ट्रस्ट की शुरू से प्रगति कार्य तक की जानकारी ट्रस्ट के अध्यक्ष शांतिलाल पडियार द्वारा दी गई। समाज मे बेहतर व्यवसाय, उच्च शिक्षा, सामाजिक नियमों का पालन,सभी को एकजुट रहने की बात मंचासीन अतिथियों द्वारा अपने उद्बोधन में कही गई। मेवाड़ा कलाल समाज महासभा एवं ट्रस्ट मंडल द्वारा कलाल समाज झाबुआ-आलीराजपुर परिक्षेत्र की परिवार परिचय पत्रिका ÷पहल÷ का भी विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। आपको बता दें कि, पहल में सामाजिक संदेश के साथ झाबुआ-अलीराजपुर रतलाम परिक्षेत्र के प्रत्येक परिवार की फोटो सहित जानकारी (बायोडाटा) उपलब्ध है, जिसका विमोचन शानदार तरीके से किया गया।

भोजन झूठा ना जाए - महिला मंडल ने दिखाया नवाचार

उक्त सामाजिक आयोजन में कलाल समाज की मेघनगर इकाई महिला मंडल द्वारा थाली में भोजन झूठ ना जाए इसके लिए एक नवाचार प्रस्तुत किया गया, जिसकी हर किसी ने सराहना की। मेघनगर कलाल महिला मंडल ने बताया कि, हमारे वैष्णव धर्म मे शास्त्र के अनुसार थाली में जूठा भोजन छोड़ना मां अन्नपूर्णा और मां लक्ष्मी का अपमान माना जाता है। ऐसा करने से स्वयं व समाज की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है, साथ ही घर आती लक्ष्मी भी रूठ कर चली जाती है,थाली में जूठा भोजन छोड़ने से व्यक्ति पाप का भागी बनता है, इसलिए थाली में खाना उतना ही लेना चाहिए जितना खा सकें और कोशिश करें कि कभी भी खाना व्यर्थ न हो व समाज को नई सिख दी। साथ ही भोजन शाला का सुव्यवस्थित संचालन प्रकाश (पोपटलाल) पडियार एवं जितेंद्र बेसर सारंगी, कीर्तिश लालू पडियार कुशलगढ़ व समाज के अन्य सदषयो ने किया।

इन मेघावी बच्चों का हुआ सम्मान, इनका रहा विशेष सहयोग

मेवाड़ा कलाल समाज एवं युवा कोर कमेटी के संयुक्त तत्वाधान में वर्ष 2022 व 23 में बोर्ड परीक्षा कक्षा 10 एवं 12 में 85 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले बच्चों का मेवाड़ा कलाल समाज द्वारा मेघावी प्रतिभा सम्मान किया गया। प्रतिभा सम्मान में चाहत भटेवरा पिता गजेंद्र भटेवरा कल्याणपुर , खुशी पिता दीपक भानपुरिया झाबुआ, भूदेव पिता महेंद्र भानपुरिया झाबुआ, माही पिता दिनेश सोलंकी थांदला, कशिष पिता योगेश पडियार कुशलगढ़, पार्थ बसेर पिता अश्विन बसेर काकनवानी, अक्षरा पडियार पिता मनीष पडियार कुशलगढ़,चहेती पिता मनीष पडियार कुशलगढ़,चेष्ठा पिता अजीत प्रसाद चौहान रतलाम, रुचिता पिता महेश भटेवरा राणापुर, ध्वनि पिता मनीष पडियार कुशलगढ़,तनीस पिता मनोज चौहान काकनवानी, दृष्टि पिता नवीन बसेर चंद्रशेखर आजाद नगर (अलीराजपुर), युक्ति पिता हेमेंद्र भानपुरिया पेटलावद ,तन्वी पिता धर्मेंद्र जायसवाल चंद्रशेखर आजाद नगर , तपस्या पिता धर्मेंद्र जायसवाल चंद्रशेखर आजाद नगर(अलीराजपुर) ,मनिष्का पिता रविप्रकाश पडियार झाबुआ, कुमारी एतिस्योपना पडियार कसारवाडी, श्री पिता धर्मेंद्र जायसवाल अलीराजपुर को कक्षा 10 वीं एवं 12वीं में प्रवीण सूची में नाम दर्ज करवाने पर कलाल अलंकरण से सम्मानित किया गया। आयोजन में विशेष रूप से समिति के अध्यक्ष दाड़मचंद लोदावला, कार्यवाहक अध्यक्ष धन्नालाल बसेर, उपाध्यक्ष देवकुमार (गौराम) पडियार, उपाध्यक्ष नंदलाल चौहान , उपाध्यक्ष शंकरलाल सोलंकी, अंबालाल भटेवरा, सचिव एजनलाल भानपुरिया, सहसचिव अंकित सोलंकी, भूपेंद्र भानपुरिया , ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष शांतिलाल पडियार, कार्यवाहक अध्यक्ष चंदूलाल पडियार, ट्रस्ट सचिव जीवनलाल पडियार , रमेश चंद्र भटेवरा हरीनगर, कोषा अध्यक्ष निहालचंद पडियार , वरिष्ठ समाजसेवी भूपेंद्र भानपुरिया व राहुल भानपुरिया सहित समस्त 14 वार्ड पार्षदो व समाजनो का विशेष सहयोग रहा । उक्त समस्त आयोजन का मंच संचालन सु- मधुर आवाज में निलेश भानपुरिया मेघनगर ने किया। आभार मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ-आलीराजपुर परिक्षेत्र के उपाध्यक्ष देव कुमार पडियार ने माना।

एग्जिट पोल तथा इसके परिणाम का प्रकाशन या प्रचार 30 नवम्बर तक प्रतिबंधित

माही की गूंज, झाबुआ।

मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन 2023 की आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि, आदर्श आचरण संहिता के दौरान 7 नवंबर की सुबह 7 बजे से 30 नवम्बर की शाम साढे 6 बजे तक निर्वाचन के संबंध में किसी भी प्रकार के एग्जिट पोल का आयोजन तथा प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा इसके परिणाम का प्रकाशन या प्रचार अथवा किसी भी अन्य तरीके से इसका प्रचार-प्रसार करने पर प्रतिबंध रहेगा। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 31 अक्टूबर 2023 को इस आशय की अधिसूचना जारी की गई थी।

राजन ने बताया कि, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 126 क में यह प्रावधानित किया गया है की कोई भी व्यक्ति कोई निर्गम मत सर्वेक्षण नहीं करेगा और किसी निर्गम मत सर्वेक्षण के परिणाम का ऐसी अवधि के दौरान जो निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में अधिसूचित की जाए, प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से प्रकाशन या प्रचार या किसी भी प्रकार की अन्य रीति से प्रसार नहीं करेगा। यदि कोई व्यक्ति प्रावधान का उल्लंघन करेगा, तो ऐसी अवधि के कारावास से जो दो वर्ष तक की हो सकेगी या जुर्माने से या दोनों से, दण्डनीय होगा।

हिंदी में पढ़ाया जाएगा लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम

इंदौर। भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर ने हिंदी में भी नेतृत्व विकास का पाठ पढ़ाने का निर्णय लिया है, और प्रमुख संस्थान ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों के लिए अगले साल जनवरी में इस विषय पर 10 दिवसीय पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना बनाई है। एक अधिकारी ने बुधवार को इसकी जानकारी दी। अधिकारी ने कहा, यह पहली बार है कि आईआईएम-आई के नेतृत्व विकास कार्यक्रम कक्षाओं में हिंदी में व्याख्यान दिए जाएंगे।

भाषा को शिक्षा में कभी बाधा नहीं बनना चाहिए- आईआईएम निदेशक

आईआईएम-आई के निदेशक डॉ. हिमांशु राय ने हिंदी में इस कोर्स के आयोजन को लेकर कहा कि भाषा को शिक्षा में कभी बाधा नहीं बनना चाहिए। हिंदी भाषा में हमारे पहले नेतृत्व विकास कार्यक्रम के साथ। हम न केवल प्रबंधन शिक्षा की दुनिया में रूढ़िवादिता को तोड़ने जा रहे हैं बल्कि हम यह भी सुनिश्चित करने जा रहे हैं कि ज्ञान और कौशल हर कोने तक पहुंचे।

निदेशक डॉ. हिमांशु ने कहा कि हिंदी भाषा में शुरू होने जा रहे नेतृत्व विकास कार्यक्रम की अवधि 10 दिनों की होगी और इसमें सभी क्षेत्रों के पेशेवर हिस्सा ले सकते हैं। इस कार्यक्रम के प्रतिभागियों को प्रबंधन प्रथाओं, वित्तीय लेखांकन, मानव संसाधन प्रबंधन, संचालन प्रबंधन, प्रबंधन के लिए डिजिटल अनुप्रयोगों, उत्पाद प्रबंधन, संकट प्रबंधन, बातचीत और संचार कौशल में प्रशिक्षण मिलेगा।

जयपुर-बांद्रा ट्रेन में हुई चाकूबाजी

पानी की कैन पर पैर लगने से हुआ विवाद, दोनो पक्षों के खिलाफ मामला दर्ज

माही की गूंज, रतलाम।

जयपुर से बांद्रा जाने वाली ट्रेन में सवार यात्रियों के दो पक्षों के बीच विवाद हो गया। विवाद में चाकूबाजी हो गई जिसमे एक पक्ष का एक युवक घायल हो गया। जिसे इलाज के लिए रतलाम जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। दोनो पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। फिलहाल किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। युवक गुजरात के सुरत जा रहे एक यात्री युवक को सोते हुए चाकू मारकर घायल कर दिया। जीआरपी पुलिस ने घायल युवक को रतलाम स्टेशन पर उतार कर जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। सूरत के उमर पाड़ा गुजरात निवासी 27 वर्षीय युवक असलम अपने तीन साथियों के साथ अजमेर से सुरत जाने के लि ए जयपुर बांद्रा ट्रेन के कोच एस 5 में यात्रा कर रहा था। इसी कोच में अजमेर से रतलाम के लिए सादिक और उसके साथी भी यात्रा कर रहे थे। इसी दौरान एक पानी की कैन पर पैर लगने को लेकर दोनो पक्षों के बीच विवाद हो गया। इस विवाद के बाद असलम अपनी बर्थ पर जाकर सो गया। इसी बीच युवक आए और सो रहे असलम पर चाकू से हमला कर दिया। ट्रेन के रतलाम पहुंचने पर घायल युवक को जीआरपी पुलिस ने रतलाम रेलवे स्टेशन पर उतार कर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जिला अस्पताल में उपचार करवा रहे युवक ने बताया कि, वह हमलावर युवकों को नहीं जानता है। हल्की बोलचाल होने के बाद वह सो गया था। इसी बीच युवक ट्रेन के कोच में आए और चाकू से हमला कर दिया। जीआरपी रतलाम ने दोनो पक्षों की रिपोर्ट पर दोनो के खिलाफ मामला दर्ज किया है। फिलहाल किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

मतगणना की तैयारियां, नोडल अधिकारियों की हुई बैठक

माही की गूंज, झाबुआ।

विधानसभा निर्वाचन 2023 के अनुसार 3 दिसंबर को जिले की तीनों विधानसभा हेतु मतों की गणना शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में की जाएगी। इसी क्रम में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री तन्वी हुड्डा एवं पुलिस अधीक्षक अगम जैन द्वारा कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अधिकारियों की बैठक ली गई। बैठक में मतगणना संबंधी नोडल अधिकारी एवं सहायक नोडल अधिकारी को दिए गए दायित्वों पर चर्चा की गई।

बैठक में कलेक्टर द्वारा मतगणना दल प्रशिक्षण प्रभारी मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती रेखा राठौर एवं सहयोगी अधिकारी सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग श्रीमती निशा मेहरा को मतगणना दलों के प्रशिक्षण को सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया। साथ ही मतगणना स्थल की व्यवस्था, ईवीएम एवं अन्य सामग्री की सीलिंग हेतु प्रभारी अधिकारी डिप्टी कलेक्टर श्रीमती आशा परमार से की गई तैयारी के संबंध में जानकारी ली एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। सारणीकरण (मैनुअल) एवं सारणीकरण (कंप्यूटराइजेशन) के नोडल अधिकारियों से की गई तैयारियों के संबंध में चर्चा की।

कलेक्टर ने रिटर्निंग अधिकारियों को निर्देशित किया कि, मतगणना स्थल पर अभ्यर्थियों के अधिकृत एजेंट हेतु फोटोयुक्त प्रवेश पास बनवाना सुनिश्चित करें।

कलेक्टर ने मतगणना स्थल पर साफ सफाई व्यवस्था हेतु सीएमओ नगरपालिका, पेयजल हेतु ईई पीएचई, विद्युत की निर्बाध आपूर्ति हेतु ईई एमपीईबी, चिकित्सा व्यवस्था हेतु सीएमएचओ को सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय सीमा में करने हेतु निर्देशित किया।

एसपी ने सुरक्षा व्यवस्था संबंधी जानकारी दी

एसपी अगम जैन ने बैठक में बताया कि, पुलिस प्रशासन सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अलर्ट है। वर्तमान में पॉलिटेक्निक कॉलेज झाबुआ में तीन स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। मतगणना दिवस हेतु व्यापक सुरक्षा के इंतजाम किए गए है। जिसमें मतगणना स्थल के प्रवेश द्वार पर पुलिस बल के साथ यातायात नियंत्रण एवं संचालन के लिए अलग फोर्स रहेगा। इसके अतिरिक्त काउंटिंग कक्ष, स्ट्रांग रूम एवं जनप्रतिनिधि की उपस्थिति वाले स्थानों पर भी पुलिस बल तैनात किया जाएगा। संपूर्ण सुरक्षा व्यवस्था के प्रभारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रेमलाल कुर्वे रहेंगे।

आप और बाप के वोट शेयर की गणित बिठा कर भाजपा -कांग्रेस बना रहे जीत के समीकरण

करीबी मुकाबला होने की आशंका, रामा विकासखंड से बड़ी जीत दर्ज करने वाले को मिलेगी जीत

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

पेटलावद विधानसभा हर बार की तरह इस बार फिर मुकाबला बेहत ही नजदीकी होने की उम्मीद् है। मतदाता पुरी तरह मौन है, भाजपा और कांग्रेस के नेता अपनी-अपनी जीत के दावे खुल कर रहे हैं। भाजपा नेताओं के दावे को माने तो चार माह पूर्व प्रदेश में शुरू हुई लाडली बहना योजना के बाद महिलाओं ने भाजपा के पक्ष में बम्पर वोटिंग की है तो कांग्रेस प्रदेश में परिवर्तन की लहर और ओपीएस लागू करने के मुद्दे पर अपनी जीत का मजबूत जीत का दावा कर रही है। लगातार सर्वे के बाद भी फिलहाल एक दल के जीत के कयास नही लग पा रही है। यहां हर बार की तरह हार-जीत का अंतर फिर से बेहत कम होने की बात की जा रही है, हालांकि भाजपा और कांग्रेस दोनों ही जीत का आंकड़ा इस बार 25 हजार होने के दावा कर चुके हैं।

आप और बाप के वोट शेयर पर निकाले जा रहे हैं हार-जीत के समीकरण

पेटलावद विधानसभा में अधिकांश मुकाबला भाजपा-कांग्रेस के बीच सीधा ही रहा है। यहां बागी की उपस्थिति नए समीकरण बनाते हैं लेकिन इस बार दोनों ही दलों को बागी की चुनौती नही मिली। लेकिन जयस समर्थन में उतरी भारत आदिवासी पार्टी और केजरीवाल की आम आदमी पार्टी की उपस्थिति के बाद चुनावी परिणाम इन दोनों दल के प्रत्याशी के प्रदर्शन पर निर्भर हो गए हैं। रामा क्षेत्र से आप पार्टी से मैदान में उतरे पूर्व मंत्री बापूसिंह डामोर के परिवार से कोमल डामोर ने पारा मण्डल में बड़ा नुकसान दोनों दलों को किया है। ईवीएम मशीन में एक नम्बर के बटन का लाभ भी मिलता दिख रहा है, जिससे हर बूथ पर मत मिलने की संभावना है। आप का वर्चस्व रामा विकास खण्ड तक ही सिमटा दिख रहा है। कुछ यही हाल बाप पार्टी के प्रत्याशी का भी है जयस के समर्थन के खड़े हुए प्रत्याशी का गढ़ सारंगी मण्डल माना जा रहा है। जहां से बड़ी बढ़त बनाने का दावा है जबकि पेटलावद मण्डल की कुछ पंचायते ओर रायपुरिया मण्डल का एक बड़ा हिस्सा जयस के प्रभाव में रहा है जहां से बाप पार्टी को उम्मीद् हैं। रामा विकास खण्ड में जाते हैं बाप का काफिला सिमटा हुआ लग रहा है हालांकि बाप के नेताओं ने रामा विकास खण्ड में भी काम किया है लेकिन कितना वोट अपनी तरफ ले पाते हैं ये बड़ा सवाल है। भाजपा और कांग्रेस के नेता जीत के समीकरण इन दोनों दलों के प्रदर्शन के आधार बनाने के प्रयास कर रहे है दोनों दल के नेता एक-दूसरे के वोट की कटिंग बताकर जीत के दावे कर रही हैं।

रामा विकास खण्ड की महत्त्वपूर्ण भूमिका

दो विकास खंडों में बटी पेटलावद विधानसभा में वर्ष 2018 के चुनाव में कांग्रेस को 17 हजार मतों की बड़ी बढ़त मिली थी। रामा विकास खण्ड में भाजपा ने जबरजस्त वापसी करते हुए कांग्रेस की लीड को तेजी से कम किया। लेकिन 4,500 सो वोटो से पीछे रह कर हार गई। इस चुनाव में रामा विकास खण्ड की भूमिका बढ़ गई है जहां से मिलने वाली बढ़त निर्णायक होगी। वर्तमान में पेटलावद विकास खण्ड में कांग्रेस को पिछले चुनाव की तरह बढ़त मिलती नही दिख रही, दोनों दलों के दावों ओर सर्वे को देखे तो पेटलावद विकास खण्ड में इस बार दोनों दलों के बीच मामूली वोटो के अंतर की संभावना हैं। बाप के दावे के मुताबिक अगर वोट मिला तो नये समीकरण बन रहे हैं जिसे कांग्रेस नेता ख़ारिज कर रहे हैं। भाजपा और कांग्रेस के प्रत्याशी रामा क्षेत्र से आते हैं जहां से दोनों को बड़ी उम्मीद् है कि, इस बार जनता उनको आशीर्वाद देगी। लगातार दोनों नेताओं को ही बड़े दलों से मौका मिलने के कारण विरोध और गुटबाजी की स्थिति है और जो इस गुटबाजी से निपटने में कामयाब रहा है उसे बढ़त मिलना तय है।

मतदाता मौन, लाडली बहना ओर परिवर्तन की लहर पर जीत के दावे

पेटलावद विधानसभा को लेकर भले दोनों दल के नेता जीत का दावा कर रहे हैं लेकिन जनता पूरी तरह से मौन धारण करते हुए किसी भी दल के पक्ष में मतदान का दावा नही कर रही। प्रत्याशियों की और से कोई बड़ा बयान या जीत के दावों के कोई बयान नही आये हैं। भाजपा की चुनावी तैयारी और वोटो की गिनती पूरी तरह से लाडली बहना पर अटकी है अगर भाजपा का ये तीर फेल हुआ तो कांग्रेस को बड़ा लाभ मिलना तय है। वही लाडली बहना उम्मीद् के मुताबिक चली तो कांग्रेस के परिवर्तन के दावों की हवा निकल सकती है। हालांकि कांग्रेस के ओल्ड पेंशन लागू करने के दावे ने कांग्रेस को सीधा ओर बड़ा लाभ पहुँचाया है।

अंत मे ....

3 दिसम्बर को चुनावो के परिणाम आना है जिसका इंतजार आम जनता और प्रत्याशियों को बेसब्री से है। परिणाम के पहले दौर में पोस्टल मतों की गिनती होनी है जिंसमे कांग्रेस को कही न कही खुशी मिल सकती है। नगर सहित पूरे क्षेत्र में जगह-जगह लोगो के झुंड में खड़े होकर चुनाव परिणामो की समीक्षा करते देखे जा रहे हैं।

आज से शुरू होगा 8 दिवसीय माँ अंबिका मवेशी मेला

माही की गूंज, बामनिया।

प्रतिवर्ष ग्राम बामनिया में लगने वाला अंबिका मवेशी मेला आज से शुरू हो रहा है। आज 23 नवंबर को मेले का उदघाटन होने के बाद विधिवत 23 से 30 नवम्बर तक मेला चलेगा। मेला ग्राउंड में मेले की तैयारिया शुरू हो चुकी हैं और बड़ी संख्या में झूला चकरी ओर मनोरंजन के सामन की दुकानें मेला ग्राउंड पहुँच कर तैयारी में जुट गए हैं। ज्ञात है कि, इस मेले से क्षेत्र में मेलो का दौर शुरू हो जाता है बामनिया के बाद पेटलावद, घुघरी, रायपुरिया सहित विकास खण्ड के कई गाँवो दो-तीन दिन के मेले का आयोजन होता है। चुनाव आयोग की आचार सहिंता 3 दिसम्बर तक लागू है और सीमावर्ती राज्य राजस्थान में भी चुनाव होना बाकी है जिसको देखते हुए प्रशासन ने शशर्त मंजूरी दी है।

झुला चकरी का समान लेकर पहुँचे मेले में संचालक

नगर की जनता बच के रहे कहीं आपके उपर भी न हो जाए हमला

माही की गूंज, जोबट।

नगर में इन दिनों बदमाश बन्दर का भय लोगो मे बना हुआ है जोबट नगर में दो माह से लगभग यह बन्दर है। नगर पंचायत के अधिकारी प्रशासन मोन है, जोबट में कई जगह इस बन्दर ने हमले किए, कई दुकानों के कांच फोड़े, कई जगह घरों में घुसकर हमला किया, कई टुविलर वाहनो को क्षति पहुंचाई, जिसके चलते जनता दहशत में है। नगर पंचायत के अधिकारी कर्मचारी लापरवाही के शिकार हैं।

इसी प्रकार जोबट में घनश्याम पंवार विश्वकर्मा को बीते दिनों एक दिन सुबह आठ बजे अपने घर पर थै। अचानक एक बदमाश बन्दर ने घर के अन्दर प्रवेश कर जानलेवा हमला किया जो की आमक जामक मे बचाव किया, दाहिने हाथ में बडा घाव कर दिया भारी मात्रा मे ब्लड निकला ओर अन्दर कमरें में जाने से पहले चक्कर आ गये। तत्काल शासकीय अस्पताल जोबट ले गये वहा डाक्टरों ने सम्हाला ओर टांके लगाये। बदमाश बन्दर 17 नवम्बर को मतदान केंद्र के सामने पुलिस की वाहन पर चढ गया था तब वाहन के शिशे बन्द कर बचाव किया था।

अज्ञात कारणों के चलते युवक ने की आत्महत्या

माही की गूंज, करवड़।

पेटलावद पुलिस थाना अंतर्गत ग्राम पंचायत करवड़ के नई आबादी फलिया के रहने वाले युवक ने मंगलवार को अपने ही घर पर अज्ञात कारण के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मिली जानकारी के अनुसार युवक सौरभ पिता नंदलाल भूरिया शाम को करीबन 5 से 6 बजे के बीच अपने ही घर पर अज्ञात कारण के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना के बाद परिजन मौके पर पहुँचे ओर पुलिस को सूचना दी। युवक का शव फंदे से उतार कर पीएम के लिए पेटलावद भेजा गया। फिलहाल युवक के आत्महत्या का कारण अभी स्पष्ट नहीं हुआ है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच कर रही है।

पटवारी यश रामावत के पिता का दुःखद निधन

माही की गूंज, पेटलावद।

लायंस क्लब पेटलावद सेंट्रल के अध्यक्ष व पटवारी यश रामावत के पिताजी ओम प्रकाश रामावत का सोमवार को आकस्मिक निधन हो गया। अचानक स्वास्थ्य खराब होने पर ओम प्रकाश रामावत को दाहोद ले गए थे जहाँ उनके निधन की सूचना आई। उनके निधन की सूचना के बाद नगर में शोक की लहर छा गई। ओमप्रकाश रामावत का अंतिम संस्कार पम्पवती स्थित शमशान घाट पर किया गया। जहां बडी संख्या में परिजनों और सामाजिक संस्थाओं के वरिष्ठों ने पहुँच कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

बदलते हालात में युवाओं का कनाडा से मोहभंग

पिछले करीब पांच दशकों से यही माना जाता था कि जो कोई भी कनाडा जाकर बसा, उसका अनुभव आमतौर बढ़िया रहा। अपना भविष्य संवारने को विदेश जाकर बसने को कनाडा एक तरजीही गंतव्य था। लेकिन अब वहां के हालात बहुत कठिन हैं। प्रवासी या तो अन्य देशों का रुख करने लगे हैं या फिर वतन लौटना पड़ रहा है। 'द लिकी बकेट- स्टडी ऑफ इमीग्रेंट रिटेन्शन ट्रेंड्स इन कनाडा' शीर्षक से हालिया अध्ययन बताता है कि अस्सी के दशक से कनाडा छोड़ अन्य देशों में बसने वाले आप्रवासियों की संख्या में बढ़ोतरी होती चली गई। यह संख्या वर्ष 2017 और 2019 के बीच सर्वाधिक रही। कोविड महामारी के बाद इनकी गिनती ज्यादा रहनी स्वाभाविक थी क्योंकि कनाडा की आर्थिकी में ह्रास हुआ है।

आप्रवासियों का कनाडा से पलायन या फिर मूल-राष्ट्र वापसी की दर बढ़ने से आयु वर्गों के बीच अनुपात संतुलन पर नकारात्मक असर पड़ना लाजिमी है। वर्ष 2010 में कुल जनसंख्या में 65 साल या उससे बड़े लोगों की संख्या 14.1 प्रतिशत थी, जो कि 2022 में बढ़कर 19 फीसदी हो गई। यदि आगंतुक आप्रवासियों के प्रवाह पर ऐसे ही अंकुश रहा तो यह अनुपात अंतर और चौड़ा होगा। इससे सरकार के कर-संग्रहण एवं व्यय खाते पर बहुत फर्क पड़ता है क्योंकि करदाताओं की संख्या कम हो रही है और पेंशनभोगियों या फिर गुज़र-बसर के लिए मदद के पात्रों की गिनती बढ़ रही है। बुजुर्ग वर्ग के बढ़ते अनुपात से स्वास्थ्य सेवा ढांचे पर और बोझ पड़ेगा।

इस स्थिति ने सरकार और नीति-निर्धारकों के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। नीति-निर्धारक कनाडा में युवा कार्यबल बढ़ाने को विभिन्न आप्रवास नीतियों के जरिये युवाओं को बुलाने पर निर्भर हैं। इस नीति के तहत जो अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी पढ़ाई पूरी कर ले और शिक्षा उपरांत कार्यानुभव की न्यूनतम अविध की शर्त भी पूरी करता हो, उसे स्थाई-निवास अनुमति (पीआर) पाने की पेशकश होती है। वर्ष 2024 में 4,85,000 और 2025 में 5,00,000 पीआर परमिट देना तय किया गया है।

कनाडा के नए आप्रवासियों का समूह उच्च कौशल कर्मी, अस्थाई विदेशी कामगार और अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों से मिलकर बना है। प्रत्येक श्रेणी को अलग किस्म की मुश्किलें दरपेश हैं। जो उच्च-कौशल कर्मी बड़े उत्साह से कनाडा में भविष्य बनाने पहुंचे थे, यहां आने के बाद उन्हें भी मुश्किलें हो रही हैं। नियमानुसार जरूरी कौशल और अनुभव होने के बावजूद उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में सुरक्षित काम मिलना मुश्किल है। वे कम मेहनताना कबूल कर रहे हैं। अधिकांश कनाडाई नियोक्ता नए आप्रवासियों की अपने मूल देश में पाई शिक्षा और कार्यानुभव को मान्यता नहीं देते। कुछ नौकरी प्रदाताओं की तरजीह उत्तरी अमेरिका से पढ़कर आने वालों को रखने पर है।

यहां कार्य-लाइसेंस प्रक्रिया जटिल व महंगी है और पूरी होने में काफी वक्त भी लगता है। कनाडा सरकार द्वारा नियमों मे ढील देकर, दाखिले के तुरंत बाद शिक्षा-परिसर से बाहर अस्थाई काम करने की

अनुमति देने के बाद अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या बढ़ने लगी। अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की आमद से कनाडाई अर्थव्यवस्था बहुत लाभान्वित होती है। वर्ष 2022 में शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा-परमिट पाए विद्यार्थियों की संख्या 8 लाख से अधिक थी। उस साल अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के आने से कनाडाई अर्थव्यवस्था में करीब 22 बिलियन डॉलर का इजाफा हुआ, और 2 लाख से अधिक स्थानीय लोगों की आय का सबब बना।

आमतौर पर नियोक्ता अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को न्यूनतम वेतन देते हैं, लिहाजा यह छोटे दुकानदारों का कम श्रमिक खर्च में अधिक मुनाफा बनाने में सहायक होता है। दो साल की पढ़ाई और एक साल कनाडा में कार्य-अनुभव के बाद कोई विद्यार्थी पीआर पाने योग्य हो जाता है, लेकिन पीआर उन्हें मिलती है जिनका कॉम्प्रिहेंसिव रैंकिंग सिस्टम (सीआरएस) में तयशुदा स्कोर बनता हो। जिसके आधार पर आकलन कर एक्सप्रेस एंट्री पूल के लिए स्कोर और रैंकिंग निर्धारण किया जाता है। सीआरएस स्कोर आवेदक की क्षमताएं जैसे भाषा बोलने-समझने की काबिलियत, शिक्षा, कार्यानुभव और उम्र से जुड़ा है। साल 2022 के लिए, हरेक पूल में सीएसआर स्कोर की न्यूनतम योग्यता विभिन्न चक्र में अलग-अलग है, प्रत्येक चक्र में न्यूनतम सीएसआर स्कोर का कट-ऑफ अधिकांशतः 491 से 557 के बीच रखा गया है। किसी पूल में कट-ऑफ वैल्यू, आवेदनकर्ताओं की कुल संख्या, उनके सीएसआर स्कोर और आव्रजन विभाग ने कितने आवेदन पाने को मंजूरी दी है, इनके मद्देनज़र तय होती है। बीते तेईस अक्तूबर तक पूल में 2,14,874 आवेदन आए और इनमें केवल 3600 युवाओं को, जिनका सीएसआर स्कोर 431 से ऊपर रहा, अगले चयन चक्र के लिए बुलाया गया। अन्य रोजगार क्षेत्र में भी कामगारों की जरूरत न्यूनतम होने के कारण, आवेदकों को अन्य तरीकों से अतिरिक्त अंक हासिल करने में हो सकता है कई महीने या फिर कई साल इंतजार करना पड़े। हालांकि तब तक, वे तीन वर्षीय वर्क परमिट वाली अस्थाई कामगार श्रेणी में गिने जाएंगे। किसी नियोक्ता का नियुक्ति पत्र हाथ में होने पर अतिरिक्त अंक का दावा बन जाता है और इसके आधार पर लेबर मार्केट इम्पैक्ट वैल्यूएशन एसेसमेंट का अनुमोदन मिलता है। लेकिन यह कह देना बड़ा आसान है और करना मुश्किल क्योंकि जब किसी पूल में आवेदकों की संख्या बहुत अधिक हो और नौकरी के अवसर काफी कम, तो बहुत से पीआर चाहवानों को विभाग से बुलावा नहीं मिलता। कभी-कभार सरकार सीएसआर स्कोर उत्तीर्णता सीमा में ढील देती है, जैसा कि 2021 में इसे घटाकर 75 कर दिया तो लाखों आवेदकों को लाभ हुआ। लेकिन अगली बार छूट कब होगी, पक्का नहीं। नतीजतन, कुछ विद्यार्थियों को अपने देश लौटना होगा। देखा गया है कि भारतीय छात्र लचीला रुख रखते हैं और लंबे समय इंतजार करते हैं या अपने सीएसआर स्कोर में बढ़ोतरी के लिए कोई अन्य हीला-हवाला अपनाने का प्रयास करते हैं। लेकिन यह बात सब पर लागू नहीं होती। सीबीसी न्यूज़, कनाडा ने 30 अप्रैल, 2022 को सरकारी आंकड़ों के हवाले से बताया कि अंतर्राष्ट्रीय छात्रों में 50 फीसदी का पढ़ाई के एक साल बाद कोई टैक्स-रिकॉर्ड नहीं है, जिससे माना जा सकता है कि वे कनाडा छोड़कर जा चुके हैं।

अमरजीत भुल्लर

उपरोक्त व्यवस्थागत बाधाओं के अलावा नीतियों में बदलाव और कनाडा में जीवनयापन खर्च में भारी इजाफा आप्रवासियों को कनाडा-स्वप्न त्यागने को मजबूर कर रहा है। कनाडा मुद्रास्फीति की जकड़ में है और आय में आनुपातिक वृद्धि न होने के कारण लोगों की बचत घट रही है। आव्रजनों, शरणार्थियों और नागरिकता के चाहवानों को कनाडा बेशक पनाह देता है, लेकिन उनके यहां बसने और बने रहने के लिए बहुत कम उपाय करता है। पीआर पाने की राह जटिलताओं और बाधाओं से भरी पड़ी है, स्पष्टता नहीं है और अप्रत्याशित नीतियों से चालित है। लेकिन तमाम मुश्किलों के बावजूद अभी भी भारतीयों की कतारें कनाडा की ओर क्यों हैं? आप्रवास में धक्का और खिंचाव के रूप में दो बल काम करते हैं। भले ही कनाडा का खिंचाव कमजोर पड़ा हो लेकिन भारतीयों का धक्का अभी भी तगड़ा है।

संपादकीय

खतरे का खनन

इसमें दो राय नहीं कि कुदरत द्वारा प्रदत्त उपहारों में पानी के बाद रेत ही प्राकृतिक संसाधन है जो मौजूदा दौर में सबसे ज्यादा उपयोग में लाया जाता है। दरअसल, यह हमारे आसपास तेज होते निर्माण कार्यों की जरूरत के चलते भी हुआ है। लेकिन प्राकृतिक संसाधनों की देशव्यापी लूट के चलते नदियों से रेत खनन इतने अवैज्ञानिक तरीके से होता है कि यह कालांतर जन-धन की क्षति का कारण साबित होने लगता है। दरअसल, नदी तल से निकाले जाने वाले रेत का हमारे पारिस्थितिकीय तंत्र पर खासा प्रतिकूल असर पड़ता है। हमारे पर्यावरण पर इसका नकारात्मक प्रभाव दूरगामी होता है। समय-समय पर हुए अध्ययन इस बात पर बल देते हैं कि नदियों के तटों से निकाली जाने वाली रेत का नियमन होना चाहिए क्योंकि उचित नियमन न होने के परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं। इस बात की पुष्टि हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान यानी आईआईटी की रोपड़ शाखा ने एक नये अध्ययन में की है। यह अध्ययन बताता है कि ब्यास नदी के तटों पर यदि वैज्ञानिक तौर-तरीकों से रेत का खनन किया जाए तो मानसून के दौरान पंजाब में बाढ़ से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। दरअसल, अंधाधुंध खनन से नदी के पानी की धारा अवरुद्ध होती है और मानसूनी बारिश का पानी नदियों में उफान मारकर बस्तियों की ओर बहने लगता है। खनन से नदियों के तटबंध भी प्रभावित होते हैं। यदि शासन-प्रशासन कायदे से खनन की अनुमति दे तो मानवीय व फसलों की क्षति को टाला जा सकता है। दरअसल, मानसून में अथाह जलराशि को अपना रास्ता मिलने से वह अपने प्राकृतिक प्रवाह के अनुरूप रहती है। नदी की भंडारण क्षमता अधिक होती है और नियंत्रित खनन से तटवर्ती शहरों व गांवों का नुकसान कम करना संभव है। दरअसल, लगातार अवैध खनन से नदियों के किनारों पर खाइयां बन जाती हैं। जो नदी के स्वाभाविक प्रवाह को बाधित करती हैं। जरूरी है कि रेत खनन को तार्किक बनाए जाने के लिये इसका गुणात्मक व मात्रात्मक डेटा जुटाया जाए।

दरअसल, पंजाब सरकार द्वारा मानसून के बाद नदियों और उसके किनारे तलछट जमा होने में पायी जाने वाली भिन्नता के आकलन के लिये आईआईटी रोपड़ की सेवाएं ली गई थी। आईआईटी की टीम ने रेत खनन में पारदर्शिता लाने के लिये एक प्रभावी नियामक तंत्र बनाने का सुझाव दिया था। इसमें ड्रोन का उपयोग करके नदी तल का मानचित्रण भी शामिल था। यह कदम नदी तलों पर खनन की वास्तविक स्थिति को बताने में सक्षम है। अध्ययन में यह बात भी सामने आई कि इस संकट को दूर करने के लिये रेत माफिया पर भी अंकुश लगाने का प्रयास किया जाए। साथ ही रेत की नीलामी और खनन की स्थिति के डिजिटलीकरण पर भी बल दिया गया। जिससे यह पता लगाया जा सकेगा कि नदी के किनारे के आसपास रेत खरीदी गई है या नहीं। इसके साथ निर्माण की गुणवत्ता के लिये रेत के ग्रेड निर्धारण का भी सुझाव दिया गया है। निस्संदेह, इस दिशा में व्यापक अनुसंधान वक्त की जरूरत है। जो पर्यावरण संरक्षण, बुनियादी निर्माण ढांचे को सुरक्षा प्रदान करने और अन्य सामग्री के नियमन के लिए भी जरूरी है। आईआईटी रोपड़ की इस भूमिका का स्वागत किया जाना चाहिए। एक ओर इस प्रयास से जहां अवैध खनन की रोकथाम में मदद मिलेगी, वहीं हर साल मानसून के दौरान फसलों व जन-धन की हानि को कम किया जा सकेगा। निस्संदेह, पंजाब में रेत और खनिजों के खनन की अपार संभावना है। जो राज्य की अर्थव्यवस्था को भी गति देने में सहायक साबित हो सकती है। जरूरत इस बात की है कि खनन की प्राथमिकताओं का निर्धारण किया जाए। इसकी नीलामी में पारदर्शिता और बेहतर प्रबंधन से बेहतर परिणाम आर्थिक व पर्यावरणीय दृष्टि से हासिल किये जा सकते हैं। साथ ही दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिये नदी की चौड़ाई व पुनः रेत पूर्ति की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए खनन स्थलों की निगरानी की जानी चाहिए। यह हमारे पर्यावरण संतुलन की अपरिहार्य शर्त भी है। शासन-प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करने की सख्त जरूरत है।

सुरंगों के संजाल से जख्मी हिमालय

जयसिंह रावत

पौराणिक नगरी जोशीमठ के धंसने के कारण तपोवन-विष्णुगाड जल विद्युत परियोजना की सुरंग के चर्चा में आने के बाद चारधाम ऑल वेदर सड़क परियोजना की उत्तरकाशी स्थित सिलक्यारा परियोजना की सुरंग सुर्खियों में है। सुरंग के एक हिस्से के धंसने से वहां फंसे 41 मजदूरों की जान संकट में पड़ने के बाद एक बार फिर विश्व की सबसे युवा पर्वतमाला हिमालय में सुरंगों के निर्माण पर सवाल भी उठने लगे हैं। दरअसल, सुरंगों सहित भूमिगत निर्माण में इस तरह के हादसे नई बात नहीं है। अब तो सुरंगों के धंसने और निर्माणाधीन सुरंगों के ऊपर बसी बस्तियों के धंसने की शिकायतें आम हो गयी हैं। सड़क परिवहन, राजमार्ग और जहाजरानी मंत्री नितिन गडकरी के अनुसार उत्तराखंड के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर में इस वक्त पौने तीन लाख करोड़ रुपये की लागत की टनल बनाई जा रही हैं।

इसमें दो राय नहीं कि विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों वाले हिमालयी क्षेत्र की जनता को विकास भी चाहिए, तभी उनकी जिन्दगी की परेशानियां कम होंगी और बेहतर जीवन सुलभ होगा। हिमालयवासियों के लिए सड़कें भी चाहिए तो बिजली-पानी और अन्य आधुनिक सुविधाएं भी। लेकिन पहाड़ों पर सड़कें बनाना तो आसान है, मगर उन सड़कों के निर्माण से उत्पन्न परिस्थितियों से निपटना उतना आसान नहीं है। तेज ढलान के कारण पन बिजली उत्पादन के लिए हिमालयी क्षेत्रों को सबसे अनुकूल माना जाता है। इसीलिये नीति-नियन्ताओं और योजनाकारों की नजर हिमालय पर पड़ी है। पन बिजली पैदा करने के लिए ग्रेविटी या ढलान की आवश्यकता होती है। मकसद यही कि तेज धार या पानी की भौतिक ऊर्जा से पावर हाउस की टरबाइन चल सकें और फिर बिजली का उत्पादन हो सके। इसके लिए पहाड़ों से बहने वाली नदियां ही सबसे माकूल हैं। इन नदियों का वेग और भौतिक ऊर्जा बढ़ाने के लिए पानी को तेज ढलान वाली सुरंगों से गुजारा जाता है जिसके लिए पहाड़ी क्षेत्र ही सबसे अनुकूल होते हैं। मैदानी क्षेत्र में पानी के लिए इतनी ढाल या ग्रेविटी के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र डुबोना होता है। इसलिये अब तक जम्मू-कश्मीर से लेकर पूर्वोत्तर तक पन बिजली के लिए योजनाकारों ने हिमालयी क्षेत्र को चिन्हित कर रखा है।

हिमालय पर सुरंगों का निर्माण शुरू से चर्चा का विषय रहा है। हिमालय के गर्भ को छलनी करने का समर्थन तो पर्यावरणविद् कर नहीं सकते मगर भूविज्ञानी भी इसमें संयम की सलाह अवश्य देते हैं। वर्तमान में हिमालय पर केवल बिजली परियोजनाओं के लिए नहीं बल्कि यातायात और अन्य गतिविधियों के

लिए भी सुरंगों का निर्माण हो रहा है। पहले भूमिगत बिजलीघर बने, लेकिन अब तो पहाड़ी नगरों में ट्रैफिक समस्या के समाधान के लिए भूमिगत पार्किंग भी बनने लगी हैं। राज्य गठन से पहले ही अकेले उत्तराखंड में चारधाम ऑल वेदर रोड और ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल परियोजना की सुरंगों के अलावा लगभग 750 किमी लम्बी सुरंगें विभिन्न चरणों में थीं।

एनटीपीसी की लगभग 12 किमी लम्बी सुरंग को जोशीमठ के धंसने के लिए पर्यावरणविद् जिम्मेदार मानते रहे हैं। जोशीमठ के ही सामने चाईं गांव के धसने के लिए 300 मेगावाट की विष्णुप्रयाग परियोजना की 13 किमी लम्बी सुरंग पर उंगलियां उठती रही हैं। पेशे से इंजीनियर रहे भारत के दूरदृष्टा सिंचाई और ऊर्जा मंत्री रहे के.एल. राव द्वारा देश के जल संसाधनों का सन् 60 के दशक में व्यापक सर्वेक्षण कराया गया था। उसी सर्वेक्षण के आधार पर भाखड़ा नंगल बांध से लेकर टिहरी बांध जैसी परियोजनाएं शुरू हुई थीं। उसी के आधार पर चिन्हित परियोजनाएं आज विभिन्न चरणों में हैं, जिनमें कुछ हरित प्राधिकरण द्वारा रोकी भी गयी हैं। इनमें लगभग कुल 750 किमी लम्बी सुरंगें विभिन्न चरणों में हैं।

वाडिया इंस्टिट्यूट आफ हिमालयन जियोलॉजी के पूर्व निदेशक एनएस विरदी और एक अन्य भू-वैज्ञानिक एके महाजन के एक शोधपत्र के मुताबिक अकेले गंगा बेसिन की प्रस्तावित और निर्माणाधीन परियोजनाओं के लिए 150 किमी लंबी सुरंगें खुद रही हैं या खोदी जा चुकी हैं। प्रस्तावित परियोजनाओं में से विष्णुप्रयाग प्रोजेक्ट पर 12 किमी सुरंग चल रही है। भागीरथी पर बनने वाली परियोजनाओं में लोहारी नागपाला 13.6 किमी, पाला मनेरी 8.7 किमी व मनेरी भाली द्वितीय में 15.40 किमी लंबी सुरंग शामिल हैं। मनेरी भाली प्रथम में पहले ही 9 किमी लंबी सुरंग काम कर रही है।

पन बिजली की इन सुरंगों के अलावा ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना पर 105.47 किमी लम्बी 17 मुख्य सुरंगें बन रही हैं और 98.54 किमी लम्बी स्केप टनल सहित कुल 218 किमी लम्बी सुरंगें विभिन्न चरणों में हैं। दरअसल किसी भी परियोजना में केवल मुख्य सुरंग का ही उल्लेख आता है। जबकि उस मुख्य सुरंग को खोदने और उसका मलबा बाहर निकलने के लिए भी सुरंगें बनानी होती हैं, जिन्हें एडिट भी कहा जाता है। इसी प्रकार चारधाम आल वेदर रोड के लिए भी कुछ सुरंगें बन रही हैं, जिनके निर्माण के लिए भी अन्य सुरंगें बन रही हैं। इसलिये सवाल उठना लाजिमी है कि अगर हिमालय के कच्चे पहाड़ अन्दर से इस तरह छलनी कर दिये जायेंगे तो उसका पर्यावरणीय और अन्य व्यावहारिक असर क्या होगा।

ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल परियोजना की सुरंगों के निर्माण में भारी विस्फोटकों के कारण टिहरी, पौड़ी और रुद्रप्रयाग जिलों की कुछ बस्तियों में न केवल मकानों में दरारें आ गयीं बल्कि यहां स्थित सारी गांव में भवन तक ढह गये। अगर भविष्य में इस परियोजना को बदरीनाथ और केदारनाथ तक विस्तार देने का प्रयास होता है तो निश्चित तौर पर इतनी ऊंचाई तक रेल लाइन पहाड़ों के अन्दर ही बनायी जा सकती हैं।

क्षेत्र की विशिष्ट भूगर्भीय, भौगोलिक और पर्यावरणीय विशेषताओं के कारण हिमालय में सुरंग निर्माण से कई चुनौतियां खड़ी हो जाती हैं। दरअसल, हिमालय जटिल भूगर्भीय संरचनाओं वाला एक भूकंपीय दृष्टि से सक्रिय क्षेत्र है, जिसमें विभिन्न प्रकार की चट्टानें, भ्रंश रेखाएं और अस्थिर भूभाग शामिल हैं। यहां कठिन चट्टानों, भूस्खलन और भूगर्भीय अस्थिरता के कारण सुरंग बनाने के लिए चुनौतियां पैदा होती हैं। निर्माण कार्य प्रायः अधिक ऊंचाई पर कठिन होता है। कम तापमान, ऑक्सीजन की कमी और कठिन पहुंच जैसी चुनौतियां निर्माण को कठिन बनाती हैं। कठोर चट्टानों में सुरंग बनाने, पानी के प्रवेश का प्रबंधन करने, वेंटिलेशन सुनिश्चित करने और खड़ी चट्टानों में स्थिरता बनाए रखने के लिए उन्नत इंजीनियरिंग तकनीकों और विशेष उपकरणों की आवश्यकता होती है। हिमालय में भूगर्भीय निर्माण गतिविधियां नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र पर व्यापक प्रभाव डाल सकती हैं। मसलन पारिस्थितिकी संतुलन, जल संसाधन और मानव बस्तियों पर प्रभाव डाल कर चिन्ता का विषय बनती हैं। जोखिमों को कम करने के लिए व्यापक योजना, भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, उन्नत तकनीक, सुरक्षा प्रोटोकॉल और कुशल जनशक्ति आवश्यक हैं।

कामयाब दुकानदार वही जो दुश्मन को भी सामान बेचे

सनत कुमार जैन

वक्त पेचीदा है, उससे ज्यादा पेचीदा यह समझना है कि कौन किसके साथ है। कतर अमेरिका का दोस्त है, अमेरिका इस्त्राइल का दोस्त है, इस्त्राइल हमास का दुश्मन है, हमास कतर का दोस्त है, तो भाईजी आखिर में कौन है किसके साथ।

दरअसल युद्ध कारोबार होता है, उसमें कोई किसी का दोस्त नहीं होता, सब अपने धंधे के दोस्त होते हैं। अरब देशों का तेल बिकता है, फिर तेल बाजार में रूस बहुत जोरदारी से आ जाता है। बाजार में एक नया बड़ा दुकानदार आ जाये, तो पुराने बड़े दुकानदार परेशान हो जाते हैं। रूस का माल धुआंधार बिक रहा है। पुराने दुकानदारों का माल कम बिक रहा है। भारत जैसे ग्राहक देशों की मौज है, बाजार में नया दुकानदार आ जाये, तो ग्राहकों की मौज आ ही जाती है। भारत रूस का दोस्त है और अरब देशों का दोस्त है, अरब देशों की पिटाई करने वाले इस्त्राइल का भी दोस्त है।

सब सबके दोस्त हैं, यानी कोई किसी का दोस्त नहीं है। धंधा धंधा है, उसमें दोस्त दोस्त नहीं होते, परमानेंटली। उसमें दुश्मन दुश्मन न होते, परमानेंटली। धंधे में सब दोस्त

हैं। वक्त था एक क्रिस गेल वेस्टइंडीज टीम की तरफ से भारतीय टीम के प्रतिद्वंद्वी होते थे। अब कपिल देव और क्रिस गेल मिल-जुलकर काम करते हैं। धंधा दोस्ती करवा देता है। पाकिस्तानी खिलाड़ियों की शिकायत यह कि उन्हें भारत से पैसे नहीं कमाने दिये जाते। भारत में आईपीएल का भंडारा चलता है, उसमें खाने-पीने पूरी दुनिया के खिलाड़ी आते हैं, पाकिस्तानियों को नहीं आने दिया जाता। पाकिस्तानी खिलाड़ियों को भी अगर आने दिया जाये, तो पाकिस्तानी खिलाड़ी भी भारत को दोस्त मानने लग जायेंगे। धंधा जहां से मिलता है, वहां दोस्ती हो जाती है या कम से कम दुश्मनी एक लेवल से आगे नहीं जाती। चाइनीज कंपनियां दे दनादन भारत में फोन बेचती हैं। गलवान हो जाये, फिर भी फोन की बिक्री चलती रहती है। चीन को पता है कि धंधा करना है, तो मारधाड़ एक लेवल से आगे नहीं जाती।

पाकिस्तान की मारधाड़ अब अफगानिस्तान से भी शुरू हो गयी है, क्योंकि अफगानिस्तान को पता है पाकिस्तान के पास है क्या, अफगानिस्तान को देने के लिए। तो कुल मिलाकर धंधे चलते रहें, तो मारधाड़ कम हो जाती है। जिनपे धंधा होता है, वो लड़ाई एक लेवल से ज्यादा न ले जा सकते। यह बात न पाकिस्तान को समझ में आती न हमास को, इसीलिए दोनों चीख रहे हैं, चिल्ला रहे हैं, कोई ध्यान नहीं दे रहा है। अरब देश भारत से कह सकते हैं-हम आपके कच्चे तेल के पुराने दुकानदार, आप कहां रूस की तरफ जा रहे हैं। भारत का जवाब यही होगा-जहां सस्ता मिलेगा जी, वहीं निकल लेंगे। दोस्ती अपनी जगह है, धंधा अपनी जगह। कतर बड़ा दुकानदार है, सब तरफ के बंदों को बेचने के लिए उसके पास कुछ है, अमेरिका को भी वह कुछ बेचता है और हमास वाले भी उससे कुछ न कुछ खरीदते हैं। कुल मिलाकर कामयाब दुकानदार वही है, जो सबको बेचे, दुश्मन को भी बेचे।

राजस्थान में लड़खड़ता तीसरा मोर्चा

राजस्थान विधानसभा चुनाव का प्रचार चरम पर पहुंच गया है। सभी राजनीतिक दलों के बड़े नेता व स्टार प्रचारक लगातार चुनावी रैलियां को संबोधित कर रहे हैं। भाजपा की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित कई प्रदेशों के मुख्यमंत्री व बड़े नेता लगातार चुनावी रैलियां को संबोधित कर रहे हैं। वहीं कांग्रेस की तरफ से राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सहित मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने चुनाव प्रचार की कमान संभाल रखी है। भाजपा जहां सभी 200 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। वहीं कांग्रेस 199 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। कांग्रेस ने भरतपुर सीट राष्ट्रीय लोक दल को गठबंधन में दी है।

जहां कांग्रेस व भाजपा पूरे जोश खरोश के साथ चुनाव लड़ रहे हैं। वहीं तीसरी ताकत बनकर चुनाव परिणाम को बदलने का दावा करने वाले तीसरे मोर्चे के दलों की स्थिति कमजोर लग रही है। विधानसभा चुनाव से पहले तीसरे मोर्चे के नेता बड़े-बड़े दावे कर सत्ता की चाबी अपने हाथ में होने की बात कह रहे थे। मगर मौजूदा चुनावी परिदृश्य को देखकर तो लगता है कि तीसरे मोर्चे के दल अपनी उपस्थिति दर्ज करवा पाने में ही नाकाम लग रहे हैं। तीसरे मोर्चे में शामिल बसपा, आप, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी, एमआईएमआईएम, वामपंथी दल, हरियाणा की जननायक जनता पार्टी, भारतीय ट्राइबल पार्टी व भारत आदिवासी पार्टी ने चुनाव से पूर्व अधिकांश सीटों पर चुनाव लड़ने के बड़े-बड़े दावे किए थे। मगर चुनावी मैदान में इनमें से कोई भी पार्टी सभी सीटों पर प्रत्याशी नहीं उतर पाई है।

पिछले चार चुनावों से प्रदेश में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही बहुजन समाज पार्टी ने भी 175 प्रत्याशियों को चुनावी मैदान में उतारा है। इस पार्टी के कई प्रत्याशियों ने तो कांग्रेस व भाजपा के प्रत्याशियों के पक्ष में अपने नाम वापस ले लिए या फिर उनको अपना समर्थन दे दिया है। वही तिजारा से पार्टी ने इमरान खान को प्रत्याशी बनाया था। जिसने अंतिम समय में कांग्रेस से टिकट लेकर चुनाव मैदान में उतर गए। बसपा के प्रदेश अध्यक्ष भगवान सिंह बाबा पार्टी की जीत के बड़े-बड़े दावे तो कर रहे हैं मगर कैसे जीतेगें इस बात का उनके पास कोई जवाब नहीं है।

बसपा सुप्रीमो मायावती भी चुनावी प्रचार में उतर चुकी है। उन्होंने पूर्वी राजस्थान के अलवर, भरतपुर जिलों की कई विधानसभा सीटों पर अपनी पार्टी के प्रत्याशियों के पक्ष में जनसभाएं भी की है। बसपा के सामने सबसे बड़ा संकट पार्टी कि साख को लेकर है। बसपा से 2008 व 2018 में 6-6 विधायक चुने गए थे। मगर दोनों ही बार सभी विधायकों ने कांग्रेस में शामिल होकर पार्टी को धत्ता बता दिया था। इसलिए लोगों का मानना है कि यदि बसपा के प्रत्याशियों को जीता भी दिया तो वह पार्टी में रहेंगे इस बात की क्या गारंटी है। पिछली बार के विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी को 6 सीट व 4.03 प्रतिशत मत मिले थे।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी जहां पिछली बार 142 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। वहीं इस बार सिर्फ 88 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। चुनाव से पहले तो अरविंद केजरीवाल व पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान राजस्थान में कई बड़ी जनसभाओं को संबोधित किया था। मगर चुनावी अभियान के दौरान दोनों ही नेता अभी तक राजस्थान नहीं आयें है। पिछले चुनाव में आप पार्टी के सभी प्रत्याशियों की जमानत जप्त हो गई थी। आप को को सिर्फ 68051 वोट मिले थे।

नागौर सांसद व राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के अध्यक्ष हनुमान बेनीवाल चुनाव से पहले बड़े-बड़े दावे कर रहे थे। मगर चुनाव में उन्होंने सिर्फ 78 सीटों पर ही प्रत्याशी उतारे है और उत्तर प्रदेश की आजाद समाज पार्टी कांशीराम के साथ गठबंधन किया है। जिसके अध्यक्ष चंद्रशेखर रावण स्वयं उत्तर प्रदेश के गोरखपुर सीट से चुनाव में बुरी तरह हार चुके हैं। उन्हे मात्र 7640 वोट ही मिले थे। हनुमान बेनीवाल ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित कई बड़े नेताओं के सामने प्रत्याशी नहीं उतारे हैं। यहां तक कि पिछले साल सरदार शहर उपचुनाव में 46000 वोट लेने के उपरांत भी उन्होंने वहां से अपने प्रत्याशी का नामांकन फॉर्म वापस करवा दिया।

पिछले विधानसभा चुनाव में बेनीवाल की पार्टी से 58 प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतरे थे। जिनमें तीन जीतने में सफल रहे थे वहीं 48 उम्मीदवारों की जमानत जप्त हो गई थी। बेनीवाल की पार्टी को 856038 यानी 2.40 प्रतिशत मत मिले थे। इस बार बेनीवाल सांसद रहते स्वयं खीवसर से अपने भाई नारायण बेनीवाल के स्थान पर चुनाव लड़ रहे हैं।

आदिवासी बेल्ट में पिछली बार भारतीय ट्राइबल पार्टी नामक नई पार्टी ने 11 सीटों पर चुनाव लड़कर दो सीट जीती थी। उनके आठ प्रत्याशियों के जमानत जप्त हो गई थी। तब पार्टी ने 255100 यानी 0.72 प्रतिशत मत प्राप्त किए थे। इस बार भारतीय ट्राइबल पार्टी का विभाजन हो गया और इससे टूटकर बनी भारत आदिवासी पार्टी ने 27 व भारतीय ट्राइबल पार्टी ने 17 प्रत्याशी मैदान में उतारे हैं। हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी की एमआईएमआईएम पार्टी के सिर्फ 10 प्रत्याशी ही खड़े हुए हैं। जबकि चुनाव से पहले ओवैसी 40 से 50 सीटों पर चुनाव लड़ने की बात कर रहे थे। चर्चा है कि ओवैसी को 10 सीटों पर भी मुश्किल से ही प्रत्याशी मिल पाए हैं।

हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी 20 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। दातारामगढ़ सीट पर कांग्रेस के मौजूदा विधायक वीरेंद्र चौधरी के सामने उनकी पत्नी रीटा चौधरी जननायक जनता पार्टी से खड़ी होकर चुनावी मुकाबले को रोचक बना दिया है। राजस्थान में वामपंथी दलों की स्थिति भी कोई ज्यादा अच्छी नहीं है। पिछली बार दो सीटों पर जीतने वाली माकपा 17 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। पिछले विधानसभा चुनाव में माकपा ने 28 व भाकपा ने 16 सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे। जिनमें माकपा के दो प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रहे थे। मगर इस बार माकपा व भाकपा के प्रत्याशियों की स्थिति ज्यादा सुदृढ़ नजर नहीं आ रही है।

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान में कांग्रेस व भाजपा के अलावा अन्य सभी दलों के नेता अपने आप को तीसरा मोर्चा कलवाना पसंद करते हैं। हालांकि तीसरा मोर्चा के दलों में भी आपस में सामंजस्य नहीं है। वे एक दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव से पहले यह प्रदेश में सत्ता बनाने के बड़े-बड़े दावे करते रहे हैं। चुनावी मैदान में उनकी स्थिति को देखकर उस लंगड़े घोड़े की याद आती है जो रेस में तो शामिल हो जाता है मगर कभी जीत नहीं पता है। आज वैसे ही स्थिति राजस्थान में तीसरे मोर्चे की हो रही है। आज भी तीसरे मोर्चे के दलों के नेता एक दूसरे की टांग खींचाई करने से नहीं चूक रहे हैं। जो उनकी सबसे बड़ी कमजोरी बनकर उभर रही है।

सात महीनों में 784 ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी, बिजली कंपनी परेशान

माही की गूंज, मंदसौर। साहिल अगवान

मंदसौर जिले में विद्युत ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी की घटनाओं ने बिजली कंपनी की परेशानियों को बढ़ा दिया है। एक अप्रैल से 31 अक्टूबर तक जिले में 784 ट्रांसफार्मरों से चोरों ने आइल चुराया है। जबकि पिछले वर्ष अप्रैल से अक्टूबर तक के सात माह में ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी की 607 घटनाएं हुई थी। आइल चोरी की बढ़ रही घटनाओं को लेकर पुलिस के ज्यादा विद्युत कंपनी के अधिकारी चिंतित है। ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी की घटनाएं जिलेभर में हो रही है।

आइल चोरी होते ही ट्रांसफार्मर बंद हो जाते हैं, जिसके कारण विद्युत सप्लाई प्रभावित होता है। सबसे ज्यादा परेशानी रबी सीजन में सामने आती है जब सिंचाई के लिए विद्युत सप्लाई के लिए अस्थाई कनेक्श दिये जाते है तब आइल चोरी के कारण ट्रांसफार्मर फेल हो जाने से नया ट्रांसफार्मर लगाने व अन्य प्रक्रिया में समय लगता है। अधिकारियों के अनुसार ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी के कारण बहुत परेशानियां हो रही है।

अधिकांश ट्रांसफार्मर खेतों के आसपास व सुनसान क्षेत्रों में ही होते है, ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी करने वाले बदमाश इसी का फायदा उठाते है। आइल चोरी के मामलों में पुलिस भी कभी-कभार एक-दो मामले ही ट्रेस कर पाती है, जबकि मंदसौर जिले में हर माह औसतन 112 ट्रासंफामरों से आइल चोरी हो रहा है, यानि हर दिन करीब चार ट्रांसफार्मरों से चोर आइल चोरी हो रहा है।

सितंबर में बिजली की मांग बढ़ते ही सामने आती है परेशानियां

ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई कनेक्शन के लिए लगे रबी सीजन की शुरुआत होते ही ट्रांसफार्मरों की आवश्यकता होने लगती है। सितंबर माह में सिंचाई के लिए अस्थाई कनेक्शन दिए जाने की प्रक्रिया के बीच जब सप्लाई शुरू होती है तब ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी होने का पता चलता है। आइल चोरी होने के बाद विद्युत सप्लाई जारी रहने से ट्रांसफार्मर फेल हो जाते है। इसके बाद सुधार व अन्य कार्य में अधिक समय लगता है। इसके कारण बिजली व्यवस्था को बनाए रखने में परेशानियां हो रही है।

90 से 200 लीटर तक आइल होता है एक ट्रांसफार्मर में

विद्युत ट्रांसफार्मर में ताप को नियंत्रित रखने के लिए आइल भरा जाता है। अधिकारियों के अनुसार ट्रांसफार्मर में 90 लीटर से लेकर 200 लीटर तक आइल भरा जाता है। ट्रांसफार्मर से खेतों व अन्य सूनसान क्षेत्रों में होने से बदमाश आसानी से आइल चोरी कर लेते है।

ट्रांसफार्मर से आइल चोरी होने के बाद विद्युत सप्लाई जारी रहने से ट्रांसफार्मर फेल हो जाता है। बदमाशों द्वारा आइल चुराने के बाद वाहन चलाने में भी उपयोग कर लिया जाता है। वहीं आइल चोरी के अधिकांश मामलों में पुलिस चोरों का पता भी नहीं लगा पाती है। इसके कारण चोरों के हौंसले बुलंद है।

पिछले वर्ष से भी अधिक हुई आइल चोरी

मंदसौर जिले में एक अप्रैल से 31 अक्टूबर तक सात माह में 784 विद्युत ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी की घटनाएं हुई है। जबकि पिछले साल एक अप्रैल से 31 अक्टूबर तक के सात में जिले में 607 ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी की घटनाएं हुई थी।

अप्रैल से 2022 से 31 मार्च 2023 तक पूरे साल में 1054 ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी हुई थी। अधिकारियों का कहना है, आइल चोरी की घटनएएं कम होने की बजाय लगातार बढ़ रही है। इसके कारण व्यवस्था प्रभावित होती है।

मामले में अधीक्षण यंत्री एमपीईबी मंदसौर सुधीर आचार्य ने बताया कि, ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी की घटनाएं लगातार बढ़ रही है। इसके कारण विद्युत सप्लाई व्यवस्था को बनाए रखने में परेशानियां होती है। सात माह में जिले में 784 ट्रांसफार्मरों से आइल चोरी हुई है। पिछले वर्ष अप्रैल से अक्टूबर तक 607 ट्रांसफार्मर से आइल चोरी हुआ था। आइल चोरी होने से ट्रांसफार्मर फेल हो जाते है, इसके कारण विद्युत सप्लाई व्यवस्था प्रभावित होती है।

शहर के कस्तूरबा नगर में पुलिस गश्त को दी चुनौती, सीसीटीवी में कैद हुए बदमाश

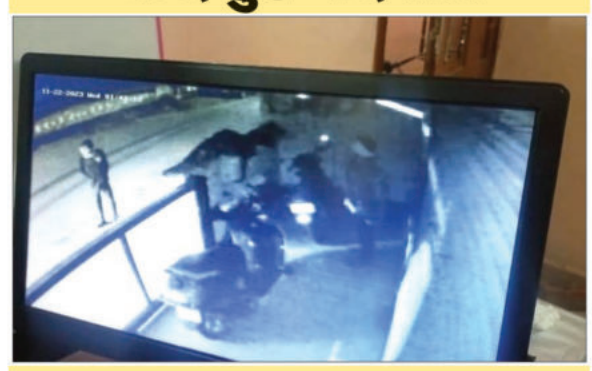

माही की गूंज, रतलाम।

मध्य प्रदेश के रतलाम जिले में चोरों का आतंक लगातार बना हुआ है। पुरानी वारदात सुलझाने में नाकाम पुलिस नई वारदात को रोकने में भी असफल साबित हो रही है। नाकाम पुलिस को बदमाश लगातार वारदात कर गश्त को चुनौती देने में जुटे हैं। मंगलवार की दरमियानी रात बदमाशों ने औद्योगिक थाना क्षेत्र के कस्तूरबा नगर में दो स्थानों पर धाबा बोला है। एक स्थान पर लगे सीसीटीवी में चोरों की हरकत कैद हुई है।बदमाशों ने बीती रात कस्तूरबा नगर रोड नंबर-5 में एक सोनोग्राफी सेंटर पर चोरी का प्रयास किया। बुधवार सुबह जब पानी की कैन रखने वाला आया तो उसने सोनोग्राफी सेंटर की शटर को खुला देखा। उसने इसकी सूचना सोनोग्राफी सेंटर संचालक डॉ. विजय बहादुर सिंह को दी। डॉ. सिंह मौके पर पहुंचे और सेंटर के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे को चेक करने पर पता चला कि रात करीब पौने दो बजे एक बाइक पर सवार तीन बदमाश मौके पर आए। एक बदमाश बाहर खड़ा रहा और दो बदमाश गेट फांदकर अंदर घुसे। बदमाशों ने शटर को उचकाया और अंदर घुस गए। डॉ. सिंह के अनुसार बदमाशों को सेंटर में मशीनों के अलावा कुछ नहीं मिला। थोड़ी बहुत चिल्लर बदमाश ले गए। डॉ. सिंह ने चोरी की वारदात की सूचना औद्योगिक क्षेत्र पुलिस को दी है। इसी तरह बदमाशों ने कस्तूरबा नगर मुख्य मार्ग स्थित एक फोटो स्टूडियो का शटर उचकाकर चोरी की वारदात का प्रयास किया। दुकान संचालक मनोज ने बताया कि शटर के पीछे काउंटर होने के कारण बदमाश अंदर घुसने में कामयाब नहीं हो सके। क्षेत्र में दो स्थानों पर चोरी के प्रयास से क्षेत्रीय रहवासी पुलिस की रात्रि गश्त पर सवाल खड़े कर रही है।

जिलाध्यक्ष को पद से हटाया, पार्टी के खिलाफ काम करने का आरोप

माही की गूंज, शाजापुर।

एमपी में विधान सभा चुनाव खत्म होते ही कांग्रेस एक्शन मोड में दिख रही है। जहां शाजापुर जिलाध्यक्ष योगेंद्र सिंह बंटी को पद से हटा दिया है। उन पर चुनाव में पार्टी के खिलाफ काम करने का आरोप है। इस संबंध में उनसे सात दिन में जवाब मांगा गया है। चुनाव में पार्टी के खिलाफ काम करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। योगेंद्र सिंह बंटी पर पार्टी के खिलाफ काम करने और अपने समर्थकों को भाजपा में शामिल कराने का आरोप है। इस संबंध में कांग्रेस के उपाध्यक्ष संगठन प्रभारी राजीव सिंह ने योगेंद्र सिंह को नोटिस जारी किया है।

दो कर्मचारी भी निलंबित

इसी कड़ी में चुनाव कार्य में लापरवाही बरतने पर 3 कर्मचारी और सहायक राजस्व निरीक्षक को निलंबित किया गया है। इसके साथ ही कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया है। उज्जैन जिले में विधानसभा चुनाव कार्य में लापरवाही बरतने पर तीन कर्मचारियों को निलंबित किया गया है। जानकारी के मुताबिक, कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कुमार पुरुषोत्तम ने नसीरउद्दीन, राजेंद्र और कमलेश व्यास को निलंबित किया है।

डॉक्टर दंपति का ड्रामाः पत्नी ने कहा, पति ने दूसरी औरत को थाईलैंड घुमाया, मुझे घर से बाहर निकलवाया

माही की गूंज, मंदसौर।

अपने सामान के साथ हॉस्पिटल के बाहर बैठ पुलिस को अपनी पीड़ा सुनाती स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. मधु जैन

मध्य प्रदेश के मंदसौर में हाई प्रोफाइल दंपति का हाई वोल्टेज ड्रामा इस दिनों सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। मंदसौर के प्रसिद्ध डॉक्टर दंपति का आपसी झगड़ा अब सड़क पर आ गए हैं। लोग इन वीडियो को तेजी से शेयर कर रहे हैं। मंदसौर के प्रसिद्ध अस्थि रोग विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. नितिन जैन और स्त्री रोग विशेषज्ञ उनकी पत्नी मधु जैन के बीच आपसी अनबन चल रही थी, लेकिन अब यह घरेलू झगड़ा बात बिगड़ने से कोर्ट तक पहुंच गया है। इस संबंध में तलाक के लिए अर्जी भी दायर कर दी गई है।

क्या है मामला...?

बताया जा रहा है कि, विवाद बढ़ने के बाद डॉक्टर की पत्नी अस्पताल पर पहुंच गई और वहां उसने जमकर हंगामा मचाया, डॉक्टर मधु अस्पताल परिसर में घुसना चाहती थीं लेकिन उन्हें अंदर नहीं जाने दिया जा रहा था। ऐसे में वे सामान के साथ ही बाहर बैठ गईं। हंगामा बढ़ता देख वहां पुलिस पहुंची और किसी तरह से मामला शांत कराया।

पत्नी का आरोप- पति किसी और के चक्कर में...

पुलिस जब वहां समाझाने के लिए पहुंची तो डॉक्टर मधु जैन रोने लगीं, उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि, मेरे पति का किसी और के साथ चक्कर है। मेरे उसके साथ घूमते-फिरते हैं। मेरे पति दूसरी महिला के साथ थाईलैंड गए थे, जब मुझे पता चल गया था तो हमारा झगड़ा हो गया, उसके बाद पति ने तलाक का आवेदन फाइल कर दिया। पति और सास-ससुर मेरे साथ मारपीट करने लगे। मुझे घर से बाहर निकाल दिया गया है।

24 वर्ष से यहां प्रैक्टिस कर रही हूं- डॉक्टर मधु

डॉक्टर मधु जैन ने बताया कि, वे अपने पति के साथ यहां पिछले 24 वर्ष से प्रैक्टिस कर रही हैं, लेकिन अब उन्हें अपने ही घर से निकाल दिया गया है। मधु कहती है कि, यह सम्पत्ति उसकी मेहनत से कमाई हुई है, इस पर उसका भी हक है। मधु का आरोप है कि, वे यहां प्रैक्टिस करना चाहती हैं, लेकिन अंदर नहीं जाने दिया जा रहा है।

बता दें कि, डॉक्टर मधु जैन मंदसौर के स्त्री रोग विशेषज्ञों में एक जाना पहचाना नाम हैं, वहीं डॉक्टर नितिन जैन भी इलाके के प्रसिद्ध अस्थि रोग विशेषज्ञ हैं। ऐसे में इनके विवाद के वीडियो लोग चटकारे लेकर शेयर कर रहे हैं।

नपाध्यक्ष और अधिकारियों ने किया पशुपतिनाथ मेला प्रांगण का निरीक्षण

माही की गूंज, मंदसौर।

नगर पालिका परिषद द्वारा भगवान पशुपतिनाथ मेले को लगाने के लिए राज्य निर्वाचन आयोग से अनुमति मांगी गई है। अनुमति की आने की संभावना को देखते हुए मंदसौर कलेक्टर एवं एसपी ने नगर पालिका अध्यक्ष व नगर पालिका के अमले के साथ मेला ग्राउंड तथा पार्किंग स्थल का निरीक्षण करने पहुंचे।

भगवान पशुपतिनाथ कार्तिक मेले का प्रारंभ देवउठनी ग्यारस से हो जाता है लेकिन इस बार चुनाव आदर्श आचरण संहिता लागू होने के कारण नगर पालिका परिषद मेले की व्यवस्था अभी तक नहीं कर पाई है। मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने मेला लगाने के लिए राज्य निर्वाचन आयोग से अनुमति मांगी थी लेकिन उन्हें अभी तक अनुमति प्राप्त नहीं हुई हैं। ऐसे में जिला कलेक्टर दिलीप कुमार यादव ने उम्मीद जताई कि राज्य निर्वाचन आयोग से जल्द ही मेला लगाने की अनुमति प्राप्त हो सकती है।

इस पर कलेक्टर दिलीप कुमार यादव, एसपी अनुराग सुजानिया, नगरपालिका अध्यक्ष रामादेवी गुर्जर, मुख्यनगर पालिका अधिकारी सहित संपूर्ण नगर पालिका अमला पशुपतिनाथ मेला ग्राउंड पहुंचा और मेले की व्यवस्था का जायजा लिया। मेले में व्यापार करने के लिए बाहर से व्यापारी पहुंच चुके हैं साथ ही झूले चकरी वालों ने पिछले मेले उन्हें जो स्थान प्रदान किया गया था उन स्थानों पर अपने झूले का सामान रख चुके हैं। अब सिर्फ अनुमति का इंतजार हे अनुमति मिलते ही नगर पालिका व जिला प्रशासन द्वारा आवश्यक तैयारियां की जाएगी।

ससुराल वालों की मारपीट से आहत होकर युवक ने की खुदकुशी, परिजन का गंभीर आरोप

माही की गूंज, सैलाना।

रतलाम जिले के सैलाना में मंगलवार सुबह ढाबे के पीछे युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। मृतक की शिनाख्त राजस्थान के बड़ी साखथली निवासी के रूप में हुई है। प्रारम्भिक जांच में मौत का कारण जहर खाना बताया जा रहा है। परिजनों का घटनास्थल पर गंभीर आरोप है कि युवक से ससुराल वालों ने मारपीट की थी। जिससे आहत होकर युवक ने आत्महत्या के लिए कदम उठाया। मौके पर फोरेंसिक अधिकारी डॉ. अतुल मित्तल ने भी पहुंच जांच शुरू कर दी है। मृतक के पिता भरतलाल और भाई सुभाष सोनावा के अनुसार कि मृतक चेतन सोनावा का विवाह 6 माह पूर्व नामली निवासी ओमप्रकाश बलसोरा की बेटी आंचल से हुआ था। शादी के बाद से ही चेतन के ससुराल वाले बेटी को ससुराल नहीं भेजते हुए रकम एवं नगदी वापसी के लिए लगातार परेशान कर रहे थे। सोमवार को चेतन के ससुराल वालों का फोन आया। बातचीत के बहाने हमें नामली बुलाया और उन्होंने हम तीनों के साथ मारपीट शुरू कर दी। आरोपियों ने चेतन की बाइक भी छीन ली। हम मौके से जैसे-तैसे भागे और पंचेड़ में अपने रिश्तेदार के यहा रुक गए। इधर मारपीट के बाद चेतन लगातार लापता बना रहा। सोमवार शाम 7 बजे चेतन ने अपने भाई को मोबाइल से लोकेशन सावन ढाबा बताते हुए जहर खाने की बात कही। परिजनों ने उसे रात भर ढूंढा मगर अंधेरा होने के कारण वह दिखाई नहीं दिया। सुबह पुनः उसी क्षेत्र में उसे ढूंढा तब गोधूलिया तालाब किनारे खाई में उसकी लाश मिली।

बदलते मौसम में बिगड़ रही लोगों की सेहत, डाक्टरों की सलाह- पानी भी उबालकर पीएं

माही की गूंज, शाजापुर।

नवंबर की शुरुआत होते ही मौसम के अलग रंग देखने को मिल रहे हैं। कभी गर्मी, कभी बारिश तो कहीं गुलाबी ठंड का एहसास हो रहा है। पल-पल बदलता मौसम लोगों की सेहत बिगाड़ रहा है। जिला अस्पताल में सर्दी-खांसी, बुखार, बदन दर्द, सर दर्द, बीपी के मरीजों की संख्या अचानक वृद्धि होने लगी है।

अन्य दिनों के मुकाबले ठंड बढ़ने के बाद से मरीजों की संख्या में इजाफा देखने को मिल रहा है। जानकारी के अनुसार जिला अस्पताल में सामान्य दिनों में प्रतिदिन 550 से 600 मरीज रोजाना आते थे जिनकी संख्या अब बढ़कर 700 से ज्यादा पहुंच रही हैं। सभी उम्र के लोग मौसमी बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। मौसम लगातार बदल रहा है और तापमान में गिरावट आ रही है। इस कारण शीतकाल में बुखार और सर्दी-जुकाम की शिकायत बढ़ने लगी है।

मौसम बदलते ही खांसी, बुखार, सर्दी-जुकाम के मरीजों की संख्या बढ़ गई है। जिला अस्पताल में इन बीमारी से जूझ रहे औसतन 20 फीसदी मरीज पहुंच रहे हैं। इसी तरह अन्य सरकारी अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या बढ़ी है।

बच्चों व वृद्धों की सेहत का ध्यान रखें

शाजापुर के शासकीय अस्पतालों के अलावा निजी चिकित्सालय में भी मरीज बड़ी संख्या में बीमारी से निजात पाने के लिए पहुंच रहे हैं। शहर के नजदीक अन्य शासकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर भी प्रतिदिन खांसी, बुखार से पीड़ित मरीज अपना इलाज कराने के लिए पहुंच रहे हैं।

जिला अस्पताल के अंतर्गत कई गांव शामिल हैं। आसपास के गांवों से भी मरीज अपना इलाज कराने के लिए यहां आते हैं। मौसम में बदलाव के चलते सर्दी-खांसी के मरीज अधिक आ रहे हैं।

डॉक्टर की सलाह

बीमारियों से बचने के पानी छानकर व उबालकर पीये। मच्छरों से बचाव करें। ताजा व पौष्टिक खाना खाएं, बाहर का खाने से परहेज करें। बच्चों व वृद्धों की सेहत का विशेष ध्यान रखें। बदलते मौसम में लोगों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। दिन में गर्म और सुबह-शाम ठंड का ये मौसम बुखार, जुकाम और खांसी-गले में खराश जैसी दिक्कतों का कारण बन सकती है। ऐसे खान पान और सेहत का ख्याल रखना ही इसका बचाव है।

अस्थमा का खतरा भी बढ़ा

बढ़ती ठंड अस्थमा मरीजों के लिए भी परेशानी का सबब बन सकती है। चिकित्सकों के मुताबिक ठंड के कारण लोगों का अधिक समय घर के भीतर बंद कमरों में बीतता है। ऐसे में बाहरी हवा के कमी और बढ़े प्रदूषण के कारण अस्थमा की समस्या या आघात का जोखिम रहता है। सर्दियों में हवा में शुष्कता के कारण सांस लेने की समस्या भी बढ़ सकती है, जो अस्थमा रोगियों के लिए जटिलताएं बढ़ा सकती है।

आरएमओ जिला अस्पताल शाजापुर सचिन नायक का कहना है कि, जिला अस्पताल में मौसम बदलने से सर्दी-खांसी, बुखार और बीपी के मरीजों की संख्या में वृद्धि होने लगी है। दीवाली के बाद और ठंड बढ़ने के बाद से मरीजों की संख्या में इजाफा हुआ है। सामान्य दिनों में प्रतिदिन 550 से 600 मरीज रोजाना आते है। मौसमी बीमारी से बचाव के लिए ताजा व पौष्टिक खाना खाएं, बाहर का खाने से परहेज करें। बच्चों व वृद्धों की सेहत का विशेष ध्यान रखें।

मतों की गणना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली हर टेबल पर निगरानी के लिए होगा एक माइक्रो आब्जर्वर

माही की गूंज, खरगोन।

विधानसभा चुनाव की मतगणना की समूची प्रक्रिया पर निगरानी के लिये भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार प्रत्येक गणना मेज पर एक माइक्रो आब्जर्वर को भी तैनात किया जायेगा। ये माइक्रो आब्जर्वर गणना सुपरवाईजर और गणना सहायक के अलावा होंगे। माइक्रो आब्जर्वर केंद्र सरकार या केंद्र सरकार के सार्वजनिक उपक्रमों का अधिकारी या कर्मचारी ही होगा। माइक्रो आब्जर्वर उस मेज की मतों की गणना की परिशुद्धता के लिए जिम्मेदार होगा जिस मेज पर उसे तैनात किया जायेगा।

निर्वाचन आयोग के मुताबिक माइक्रो आब्जर्वर के रूप में तैनात कर्मचारी ईव्हीएम द्वारा प्रदर्शित प्रत्येक दौर के गणना किये जा रहे मतों का ब्यौरा उन्हें दिये गये मुद्रित उस प्रारूप में दर्ज करेंगे जिसमें कंट्रोल यूनिट नंबर, चक्र नंबर, मेज नंबर, मतगणना केन्द्र नंबर तथा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के नामों का उल्लेख होगा। माइक्रो आब्जर्वर को इस बारे में बकायदा प्रशिक्षण भी दिया जायेगा।

गणना मेज के सामने बैठेंगे उम्मीदवारों के गणना अभिकर्त्ता

विधानसभा चुनाव के लिये डाले गये मतों की गणना पंक्तियों में व्यवस्थित मेजों पर की जायेगी। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार प्रत्येक पंक्ति में लगी मेजों को क्रमांक दिया जायेगा। प्रत्येक गणना मेज पर गणना अभिकर्ताओं के बैठने की व्यवस्था की जायेगी।

निर्वाचन आयोग के अनुसार गणना मेज के सामने उम्मीदवारों के गणना अभिकर्त्ताओं के बैठने की व्यवस्था में प्राथमिकता की श्रेणियों का ध्यान दिया जायेगा। गणना टेबल पर प्रथम पंक्ति में सबसे पहले मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय पार्टियों के उम्मीदवारों के गणना अभिकर्ता बैठेंगे। उसके बाद मान्यता प्राप्त राज्य पार्टियों के उम्मीदवारों के गणना अभिकर्ता के बैठ सकेंगे। इनके बाद अन्य राज्यों के मान्यता प्राप्त राज्य दलों के उम्मीदवार के अभिकर्त्ता बैठेंगे। उनके बाद पंजीकृत अमान्यता प्राप्त दलों के उम्मीदवारों के गणना अभिकर्ता तथा सबसे अंत में निर्दलीय उम्मीदवारों के गणना अभिकर्ता बैठेंगे।

मतगणना केन्द्र पर चलेगा पता किसको कहां की करनी है गणना

मतगणना प्रक्रिया में पूरी पारदर्शिता एवं निष्पक्षता सुनिश्चित करने की निर्वाचन आयोग की मंशा के अनुरूप मतगणना के लिए नियुक्त अधिकारियों कर्मचारियों को मतगणना स्थल पहुंचने पर ही यह बताया जायेगा कि उन्हें किस विधानसभा क्षेत्र की किस टेबल पर मतों की गणना करनी है। मतगणना कार्य से संबद्ध सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मतगणना स्थल में प्रवेश हेतु परिचय पत्र जारी किये जायेंगे। आयोग के निर्देश के मुताबिक मतगणना के दिन मतगणना अधिकारियों को मतगणना केन्द्र पर प्रातः 6 बजे पहुंचना होगा। गोपनीयता की दृष्टि से इन अधिकारियों को विधानसभा क्षेत्र या मतगणना टेबल नंबर की जानकारी पहले से नहीं दी जायेगी। चुनाव आयोग के प्रेक्षक तथा जिला निर्वाचन अधिकारी मतगणना के लिए प्रातः 5 बजे एक स्थान पर तीसरे और अंतिम चरण के रेण्डमाईजेशन हेतु एकत्रित होंगे। इसी समय जिला निर्वाचन अधिकारी मतगणना हेतु जिले के प्रशिक्षित अधिकारियों कर्मचारियों की सूची प्रेक्षकों को सौंपेंगे। इसमें गणना पर्यवेक्षक तथा अन्य गणना सहायकों के नामों की सूची होगी। इस दौरान प्रत्येक गणना अधिकारी को एक यूनिक सीरियल नंबर या कोड दिया जायेगा, जो एक तरह से लेवल्ड रहेगा। जिससे यह पता चलेगा कि उसमें उसकी श्रेणी मतगणना पर्यवेक्षक की है या मतगणना सहायक की।

इसरो के पूर्व अध्यक्ष के सिवन ने परिवार के साथ किया ओंकारेश्वर दर्शन

माही की गूंज, खरगोन।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष के सिवन मंगलवार को ओंकारेश्वर पहुंचे। भारत के मंगलयान मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अंतरिक्ष वैज्ञानिक सिवन की सुरक्षा के लिए ओंकारेश्वर में कड़े सुरक्षा के प्रबंध किए गए थे। उन्होंने 12 ज्योतिर्लिंग में से एक ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन और पूजा अर्चना की। मंदिर संस्थान की अतिथि पुस्तिका में अपने अनुभव भी साझा किए। इस दौरान मंदिर संस्थान के मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी राव देवेन्द्र सिंह और ट्रस्टी जंगबहादुर सिंह ने मंदिर परिसर में ज्योतिर्लिंग भगवान् का छायाचित्र भेंट कर आत्मीय स्वागत किया। विज्ञानी सिवन के दर्शन, पूजन और अभिषेक पंडा संघ के पूर्व अध्यक्ष पंडित निलेश पुरोहित ने कराया।

इंदौर में रहकर दर्शन से कैसे रह सकते थे अछूते

पत्रकारों से चर्चा करते हुए अंतरिक्ष विज्ञानी सिवन ने कहा कि, ओंकारेश्वर महाराज से भारत के लोगों की बेहतरी के लिए प्रार्थना करने आए है। उन्होंने कहा कि वे इसरो के जो आने वाले मिशन हैं वह सफल हो ऐसे ही कामना भगवान ओंकारेश्वर से की है। उन्होंने कहा कि वे इंदौर आइआइटी में सेवाएं दे रहे है। इंदौर के समीप ही ओंकारेश्वर है और इतने पास रहते वे दर्शन से कैसे अछूते रह सकते थे। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष सिवन के साथ आइआइटी इंदौर के अन्य पदाधिकारी भी मौजूद थे।

पत्नी को ससुराल लेने आए दामाद ने ससुर पर किया चाकू से हमला, घटना के बाद इलाके में मची अफरातफरी

माही की गूंज, खरगोन।

खरगोन जिले के बड़वाह में दिनदहाड़े एक दामाद ने सब्जी विक्रेता बुजुर्ग ससुर पर चाकू से हमला कर दिया। चाकू लगने से ससुर गंभीर रूप से घायल हो गया है। जिसे बड़वाह के शासकीय अस्पताल में प्राथमिक इलाज के बाद इंदौर रेफर किया गया है। घटना के बाद पुलिस ने आरोपी दामाद को हिरासत में ले लिया है। बता दें कि, घटना बुधवार सुबह 11 बजे की है। प्रतिदिन की तरह गवली मोहल्ला निवासी 56 वर्षीय राजेन्द्र जैन तिलक मार्ग स्थित सत्यनारायण मन्दिर के समीप सब्जी का ठेला लगा रहा था। इसी दौरान उसका दामाद महिपाल सिंह मौर्य निवासी निमाड़ खेड़ी आया और अपने ससुर के पेट और बायीं जांघ पर चाकू से हमला कर दिया। जिसके बाद वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। यह देख पूरे क्षेत्र में अफरातफरी मच गई।

वहीं आरोपी महिपाल घटना को अंजाम देकर भाग रहा था इस दौरान आसपास लोगों की तत्परता से उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया। घटना को लेकर बड़वाह एसडीओपी का कहना है कि तीन चार दिन पूर्व भी ससुर और दामाद में विवाद हुआ था। आरोपी मायके में रह रही अपनी पत्नी को लेने आया था। वहीं घायल को इंदौर रेफर किया गया है। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है।

अंदड़ क्षेत्र में खेत में तेंदुआ दिखने से ग्रामीणों में दहशत

माही की गूंज, खरगोन।

क्षेत्र में तेंदुआ और उसके शावक के आने से किसानों में दहशत का माहौल है। विगत 15 दिनों से ग्राम अंदड और उसके आसपास के क्षेत्र में तेंदुआ और उसके दो शावक सक्रिय है। तेंदुए ने दो सूअर और एक बंदर व बकरे को शिकार बनाया है। रबी की फसल के दौरान खेतों में किसानों द्वारा रात्रि सिंचाई की जा रही है। वहीं क्षेत्र में तेंदुए के आने से किसान दहशत में है। किसान खेतों से अपना काम छोड़कर भाग रहे हैं।

तेंदुए के डर से किसानों ने मांग की कि बिजली विभाग केवल दिन में ही पर्याप्त बिजली दें, जिससे किसानों को रात में खेत में नहीं जाना पड़े। गांव के ही सीताराम ने बताया कि वह अपने खेत में सिंचाई के लिए जा रहे थे। अचानक उन्हें जानवर दिखाई दिया और वह अपना वाहन छोड़कर भाग गए।

साथ ही गांव के राधेश्याम यादव ने भी अपने खेत में तेंदुआ देखा। मंगलवार दोपहर में दिनेश परशुराम यादव अपनी पत्नी के साथ खेत में काम कर रहे थे। उन्होंने भी जानवर को देखा और वह अपना काम छोड़कर घर की और भाग गए। उक्त जानकारी विभाग को दी गई है। उसके बाद वन विभाग की टीम में निरीक्षण भी किया है।

वहीं तेंदुओं को पकड़ने के लिए वनविभाग द्वारा पिंजरा भी लगाया गया है। साथ ही ग्रामीणों की विद्युत विभाग से यह मांग की कि पर्याप्त बिजली केवल दिन के समय ही दी जाए। क्योंकि किसान रात्रि के समय अब दहशत के कारण खेतों में सिंचाई नहीं कर पा रहे हैं। ताकि तेंदुए के आने से दिन के समय पर्याप्त सिंचाई हो पाए और फसल प्रभावित नहीं हो।

पेट्रोल पंप से अपहरण की गई लड़की बरामद

ग्वालियर।

ग्वालियर के पेट्रोल पंप से दिनदहाड़े जिस लड़की का अपहरण किया गया था उसे बरामद कर लिया गया है। वह गुना के एक लॉज में मिली है। पुलिस ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि दोनों आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। लड़की की बरामदगी और आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद पता चला कि तीनों तीन साल से परिचित हैं।

ग्वालियर के एसएसपी राजेश सिंह चंदेल ने बताया कि जिस लड़की को सोमवार को नाका चंद्रवदानी के पास पेट्रोल पंप से गिरफ्तार किया गया था उसे गुना के एक लॉज से बरामद किया गया है। उसे बाइक सवार दो लोग दिनदहाड़े उठाकर ले जाते दिखे थे। वीडियो सामने आने के बाद यह वायरल हो गया था और प्रदेश की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठ रहे थे।

पुलिस ने लड़की, दोनों आरोपी और घटना में शामिल बाइक को बरामद कर लिया है। बाइक से ही दोनों आरोपी लड़की को गुना तक ले गए थे। यहां एक लॉज में एक आरोपी लड़की के साथ ठहरा था। भिंड की रहने वाली 19 साल की लड़की बस से ग्वालियर आई थी। वह अपने रिश्तेदार के गृह प्रवेश के कार्यक्रम में शामिल होने जा रही थी। बस स्टैंड पर उतरकर वह पेट्रोल पंप के वॉशरूम में पहुंची थी। उसी वक्त बाइक से दोनों लड़के भी वहां पहुंचते हैं। वॉशरूम से लड़की के निकलने के बाद वह लड़की को बाइक पर बिठाकर फरार हो जाते हैं। परिजनों ने तत्काल झांसी रोड थाना में इसकी जानकारी दी।

इस तरह हुआ खुलासा

पुलिस का कहना है दोनों ही आरोपी राघवेंद्र और रोहित लड़की से पहले से ही परिचित थे। गुना पहुंचने के बाद राघवेंद्र ने रोहित और छात्र को एक लॉज में छोड़ा और अपने गांव बरहा भिंड पहुंच गया। सीसीटीवी कैमरे से मिले फुटेज और संदिग्ध आरोपी से की गई पूछताछ के बाद वह ज्यादा देर नहीं टिक पाया और आरोपी ने अपनी जुबान खोल दी। उसकी सूचना पर तत्काल पुलिस टीम ने रवाना होकर गुना से आरोपी और लड़की को बरामद कर लिया।

3 साल से थी दोस्ती

बताया जा रहा है कि आरोपी और छात्रा बीते 3 सालों से एक दूसरे के परिचित हैं और संपर्क में है। आरोपी ने अपने दोस्त के साथ मिलकर छात्रा को अगवा करने का प्लान लगभग चार दिन पहले बना लिया था। पुलिस ने राघवेंद्र और रोहित दोनों को ही गिरफ्तार कर लिया है वारदात में शामिल बाइक को भी बरामद कर जप्त कर लिया है।

मतदान के बाद कांग्रेसियों को सता रहा डर, कहा मोदी जी आए थे कुछ भी हो सकता है...

माही की गूंज, बड़वानी।

ज़िले में 17 नवम्बर की शांतिपूर्ण मतदान संपन्न हुआ मतदान के बाद प्रत्याशीयों के भाग्य का फ़ैसला अब ईवीएम मशीन में क़ैद हो गया है। इन ईवीएम मशीनों को बड़वानी एकलव्य विद्यालय परिसर में बनाए गए स्ट्रांग रूम में सील करके रख दिया गया है, लेकिन मतदान के बाद कांग्रेसियों को डर सता रहा है कि कहीं भाजपा ईवीएम मशीनों के साथ कोई छेड़-छाड़ ना करें इसलिए कांग्रेसी अब अनुमति लेकर स्ट्रांग रूम के सामने चौकीदारी कर रहे हैं।

ईवीएम मशीनों से हो सकती है छेड़खानी

बड़वानी से कांग्रेस प्रत्याशी राजन मंडलोई कहते हैं कि हमारे कार्यकर्ताओं ने बहुत मेहनत की है और हमें डर है कि कहीं ईवीएम मशीनों से छेड़खानी न हो जाए क्योंकि ईवीएम मशीनों से छिड़खानी संभव है और हमारी मेहनत में पानी न फिर जाए इसलिए हम स्ट्रांग रूम के बाहर मैदान में पहरा दे रहे हैं और जब भी मोदी जी जहां जाते हैं वहां भाजपा हारती है। बड़वानी में भी मोदी जी आए थे तो कुछ भी हो सकता है इसलिए हम हर तरह से सतर्कता बरतना चाहते हैं।

वहीं सेंधवा विधानसभा से पहरा देने आए कांग्रेसी गौतम नामक व्यक्ति का कहना है कि हमें इस बात की चिंता है कि भाजपा की सरकार है और वो कहीं मशीनों के साथ छेड़-छाड़ न करें इसलिए हम स्ट्रांग रूम के बाहर पहरा दे रहे हैं। हम कुल 4 लोग हैं और बारी बारी से रात भर जागते हैं पहले दो लोग जागते हैं और दो सो जाते हैं कुछ दिन तक हम रहेंगे और फिर दूसरे लोग हमारे स्थान पर आ जाएंगे इस तरह से ईवीएम मशीन का पहरा देंगे।

माही की गूंज
बेबाकी के साथ...सच
एजेंसी देना है
झाबुआ जिले में
रंभापुर, मदरानी, झकनावदा, खवासा, राणापुर
अलीराजपुर जिले में
सौंडवा, कट्ठीवाड़ा, छकतला, चांदपुर, बोरी
संपर्क - 9589882798, 9981318651

डेढ साल के बच्चे से दरिंदगी, 40 बार दागने के मामले में जांच शुरू

शहडोल।

मध्य प्रदेश में डेढ़ साल के मासूम बच्चे को लोहे की रॉड से 40 बार दागे जाने के मामले में अब जांच के आदेश दिए गए हैं। बताया जा रहा है कि मासूम लड़का निमोनिया से पीड़ित था। शहडोल जिले के एक गांव में स्थानीय नर्स ने बच्चे का निमोनिया ठीक करने के लिए उसे लोहे की रॉड से 40 बार दागा था। अधिकारियों ने मंगलवार को इस बात की जानकारी दी है। बाद में जब बच्चे की हालत बिगड़ गई तब उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था और फिर यह पूरा मामला उजागर हुआ था। बच्चे की गर्दन, पेट और शरीर के अन्य हिस्सों में 40 से ज्यादा जख्म के निशान मिले हैं। अब लड़के का इलाज शहडोल के सरकारी अस्पताल में चल रहा है और इस मामले में जांच के आदेश दिए गए हैं।

मासूम बच्चे का परिवार हर्दी गांव में रहता है। बच्चे की तबीयत खराब होने पर उन्होंने एक दाई (गांव की नर्स)को बुलाया था। आरोप है कि उसी ने बच्चे के शरीर को लोहे की रॉड से 40 से ज्यादा बार दागा। 4 नवंबर को उसने ऐसा बच्चे के इलाज के नाम पर किया था। डॉक्टर आर एस पांडे ने कहा कि बच्चे की दादी ने एक दाई से दागने वाला यह इलाज घर पर ही करवाया था। उन्होंने कहा कि जब बच्चे की हालत खराब हो गई तब उसे जिला अस्पताल लाया गया। इसके बाद उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में रेफर किया गया है। इस मामले में स्वास्थ्य अधिकारियों की एक टीम बनाई गई है। यह टीम घटना की जांच-पड़ताल केरगी। मेडिकल कॉलेज में चंमकपंजतपबे विभाग के प्रमुख निशांत प्रभाकर ने कहा कि जन्म के समय भी बच्चे को गर्म लोहे से दागा गया था और जब उसे निमोनिया हुआ तब भी उसे गर्म लोहे से दागा गया। बच्चे के गर्दन, पेट, पीठ और शरीर के अन्य हिस्सों पर दागने के 40 से ज्यादा निशान हैं।

डॉक्टर ने कहा कि बच्चे की स्थिति अब ठीक है। बता दें कि जिले के आदिवासी बहुल इलाकों में बच्चों को इलाज के लिए ग्रम लोहे से दागना आम बात है। इसी साल फरवरी के महीने में ढाई साल की एक बच्ची की मौत हो गई थी। बाद में पता चला था कि निमोनिया के इलाज के लिए बच्ची के शरीर को 50 से ज्यादा बार गर्म लोहे की छड़ से दागा गया था। इसी महीने तीन महीने की बच्ची के साथ भी ऐसी ही दरिंदगी का मामला सामने आया था।

आजीविका भवन चढ़े भ्रष्टाचार की भेंट, शासन के आदेश की उड़ाई धज्जियां

पूरे प्रदेश में करीब 80 करोड़ रुपए और जिले में करीब तीन करोड़ रुपए का मामला

माही की गूंज, अलीराजपुर।

मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिलाओं के समूहों की बड़ी संस्था जिसको संकुल स्तरीय संगठन के नाम से जाना जाता है, जिसमे आजीविका विकास के लिए गतिविधियां संचालित की जाना थी। इसके लिए मध्य प्रदेश के सभी जिलों के 159 विकास खंडों में आजीविका भवन बनाने के लिए पंचायत ग्रामीण विकास विभाग मध्यप्रदेश शासन के अपर मुख्य सचिव राधेश्याम जुलानिया ने दिनांक 4 सितंबर 2017 को पत्र क्रमांक 6114/परा/निर्माण-आमि/2017 द्वारा मध्य प्रदेश के 159 विकासखंडो में हर आजीविका भवन के निर्माण एवं फर्निशिंग के लिए 50 पचास लाख रुपए की राशि तय कर कुल 79 करोड़ 50 लाख रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति जिला पंचायत के जमा वित्त आयोग/ मुद्रांक शुल्क/अन्य राशियां मद से आदेश के रूप में जारी की गई थी।

जिले के 6 विकासखंडो में गठित संकुल संगठनों के बैंक खातों में पहली किस्त के रूप में 20 लाख रुपए सहित कुल एक करोड़ 20 लाख रुपए भी जारी कर दिए गए थे। विश्वत सूत्रों से पता चला है कि, राशि जारी होने के कुछ ही महीनों के बाद बिना किसी पत्र के कर्मचारीयों पर दबाव बनाकर मौखिक आदेश देकर जिला पंचायत के खाते में यह रकम वापस जमा करवा दी गई। इस तरह जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी और आजीविका मिशन के जिला अधिकारियों ने मिलकर आईएस के माध्यम से ठेकेदारों को आजीविका भवन बनाने का ठेका दे दिया और अपर मुख्य सचिव पंचायत ग्रामीण विकास विभाग राधेश्याम जुलानिया के आदेश को ताक में रखते हुए उसकी धज्जियां उड़ा दी।

अपर मुख्य सचिव के आदेश में स्पष्ट रूप से स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि, आजीविका भवन के निर्माण का काम गरीब ग्रामीण महिलाओं द्वारा गठित संकुल स्तरीय स्तरीय संगठनों के माध्यम से किया जाएगा। परंतु आजीविका मिशन और जिला पंचायत के अधिकारियों की सांठ-गांठ के चलते उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए काम की प्रक्रिया को ही बदल दिया।

आदेश के अंतर्गत दी गई शर्तों में बिंदु क्रमांक 2.5 पर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था कि, आजीविका भवन के निर्माण का कार्य संकुल स्तरीय संगठन ही रहेगा और ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के कार्यपालन यंत्री की निगरानी में और उनके मापदंडों के अनुरूप ही कार्य पूरा किया जाएगा। परंतु ठेकेदारों और अधिकारियों की सांठगांठ ने पूरी शर्तों को ही बदल दिया और अपने फायदे के अनुसार नियमों को ताक पर रख दिया।

आदेश के बिंदु क्रमांक 2.1 में भवन निर्माण के लिए 5000 वर्ग फीट जमीन विकासखंड स्तर पर अथवा कस्बे के अंदर उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए गए थे। साथ ही महिलाओं के लिए आजीविका भवन ऐसे स्थान पर बनाने के लिए लिखा गया था जहां वह जगह महिलाओं के लिए सुरक्षित सुविधाजनक और कस्बे के अंदर हो। परंतु अलीराजपुर जिले के अंदर कई स्थानों पर आजीविका भवन ऐसे स्थानों पर बना दिए गए जिनकी उपयोगिता ही नहीं है और महिलाओं के लिए सुरक्षित भी नहीं है। इस तरह जनता की टेक्स की राशि का दुरुपयोग कर केवल औपचारिकता पूरी की गई और सरकार की राशि को चुना लगाया गया। जोबट विकासखंड का आजीविका भवन शहर से दूर ग्राम कंदा में ऐसी जगह बनाया गया है जो महिलाओं के लिए सुविधाजनक और सुरक्षित भी नहीं है। इस आधे अधूरे भवन को बने हुए करीब 3 वर्ष होने को है और उसे अभी तक संकुल संगठन को हवाले नहीं किया गया। जिले के दूसरे विकास खंडों में भी कमोवेश यही स्थिति है। गूंज प्रतिनिधि ने भ्रमण कर भवन का अवलोकन किया तो पाया कि उसकी दरवाजे खिड़कियां गायब हैं, अंदर गंदगी भरी पड़ी है टाइल्से टूटी हुई है और भवन हैंड औवर होने से पहले ही जर्जर स्थिति में आ गया।

पूरे जिले में हर आजीविका भवनो के आसपास बाउंड्री वॉल बनाने और रंगाई पुताई के लिए 4 लाख रुपए का बजट प्रावधान किया गया था। परंतु हमारी जानकारी के अनुसार किसी भी आजीविका भवन के आसपास बाउंड्री वाल नहीं बनाई गई है कई स्थानों पर रोड एप्रोच भी नहीं है। रंगाई पुताई के नाम पर चूने का उपयोग किया गया है। भवन के दरवाजे और खिड़कियां हल्की गुणवत्ता वाली है जिसकी कोई गारंटी नहीं है।

कार्य की प्रगति के आधार पर जिसमें प्लिथ लेवल पर कार्य हो जाने पर 8 लाख, छत स्तर पर आने पर 8 लाख रुपए, छत भरने पर 12 लाख रुपये, भवन निर्माण होने पर 8 लाख रुपए और बाउंड्री वॉल और रंगाई पुताई के लिए 4 लाख रुपए सहित कुल 40 लाख रुपए का आजीविका भवन अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। जिला प्रशासन और राज्य सरकार के नुमाइंदे, मुख्यमंत्री सहित कई बड़े नेता इस रोड से कई बार इसके सामने से निकल चुके हैं, क्या उनकी इस पर नजर नहीं पड़ी...?

कुछ ऐसे प्रश्न जिन पर जांच की जाना चाहिए

- जब प्रदेश के अपर मुख्य सचिव महिलाओं की संस्थाओं पर भरोसा करते हैं और उन्हें भवन निर्माण करने की जिम्मेदारी देते हैं तो फिर उनको काम करने का अवसर क्यों नहीं दिया गया, ऐसा क्यों किया गया...?
- किसके आदेश और निर्देश पर संकुल संगठनों के खाते से जिला पंचायत के खाते में राशि की वापसी करवाई गई...?
- ठेकेदारों के माध्यम से काम करने के लिए क्या प्रक्रिया की गई...?
- आजीविका भवन के निर्माण का काम कितने समय होना चाहिए था। क्या हुआ समय से पूरा हुआ...?
- कार्य का पूर्णता प्रमाण पत्र किसने जारी किया और किस आधार पर जारी किया...?
- क्या ठेकेदारों को पूरा भुगतान कर दिया गया यदि हां तो बाउंड्री वॉल और दूसरे काम समय पर क्यों नहीं करवाऐ गये...?
- ठेकेदारों को भुगतान कार्य शुरू करने से लेकर पूरा होने तक कितने किस्तों में और कब कब किया है...?

क्या दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई होगी?

यह तो खैर मनाओ की आजीविका भवन की फर्निशिंग जिसमें भवन के अंदर बैठक हाल में फर्नीचर, टेबले कुर्सियां और अन्य सामग्री जिसका बजट 10 लाख रुपए हर आजीविका भवन के लिए तय किया गया था, पर शुक्र है भगवान का कि आजीविका मिशन के अधिकारियों और ठेकेदारों की नजर इस पर नहीं पड़ी वरना भवन के साथ सामग्री के नाम पर भी भ्रष्टाचार को अंजाम दे दिया जाता। आसपास के जिलों में सूत्रों के हवाले से जानकारी मिली है कि, वहां पर भी ऐसे ही तरीके अपनाकर आजीविका भवन के निर्माण के साथ-साथ फर्निशिंग के नाम पर आए राशि को भी ठेकेदारों के साथ सांठ-गांठ कर डकार लिया गया है। यदि

पूरे प्रदेश में मध्य प्रदेश ग्रामीण आजीविका मिशन के आजीविका भवनो के निर्माण एवं फर्निशिंग के कामों की बारीकी से जांच की जाए तो करोड़ों रुपए के भ्रष्टाचार उजागर होने की संभावना है। क्योंकि महिलाओं की आजीविका बढ़ाने के नाम पर बनवाऐ गए इस भवन में महिलाओं के संगठनों की भूमिका और भागीदारी कहीं पर भी नजर नहीं आई है। ऐसे में भगवान के प्रति उनका लगाव कितना रहेगा क्या वे उसका सही रखरखाव करेगी यह आने वाला वक्त ही बताएगा।

अब देखना है कि, जिला कलेक्टर और जिला प्रशासन क्या कार्रवाई करते हैं...?

एक दिसंबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल करेंगे ड्राइवर, मांगों को लेकर कर रहे हैं आंदोलन

माही की गूंज, अलीराजपुर।

ऑल इंडिया ड्राइवर कल्याण संघ अपनी 29 सूत्री मांगों को लेकर आंदोलन कर रहा है। संघ ने 1 दिसंबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल का आह्वान किया है। अलीराजपुर जिले के ड्राइवर एसोसियन के जिलाध्यक्ष विजय डुडवे, उपाध्यक्ष कैलाश भिंडे ने बताया, मध्यप्रदेश भारत संघ के तत्वाधान में मनावर में संघ के बैनर तले एक आमसभा हुई। जिसमें आलीराजपुर जिले के भी सैकड़ो ड्राइवरों ने भाग लिया। आम सभा के पूर्व गंधवानी धार अलिराजपुर बड़वानी खरगोन झाबुआ देवास आगर मालवा सिहोर सहित अन्य जिलों से ड्राइवर पहुंचे। वे डीजे के साथ धार जिले से मांगोद से 40 किलो मीटर की वाहन से जब यात्रा निकाली तो सभी शहरों ग्रामीणों ने इनका स्वागत जगह-जगह किया। मनावर में जुलूस के साथ रैली निकाली गई। जिसमे अन्य प्रदेश भीलवाड़ा प्रदेश अध्यक्ष ललित, चित्तौड़ प्रदेश उपाअध्यक्ष राधेस्याम बंजारा, सीहोर उज्जैन जीवन परिहार, दिनेश परिहार, लुधियाना सुरेंद्र प्रसाद, रास्ट्रीय अध्यक्ष लुधियाना पंजाब धार जिले से महेश चन्द्रन्सी अध्यक्ष उपाध्यक्ष दिनेश रघुवंशी शामिल हुए।

बिजली विभाग कर रहा मनमानी

अधिकारी इस दौरान ध्यान देने को तैयार नहीं, 1912 पर भी इन लोगों की शिकायत हो चुकी है

माही की गूंज, उदयगढ़। खलील मंसूरी

अलीराजपुर जिले के उदयगढ़ मुख्यालय पर बिजली 24 घंटे में से मुश्किल से 8 से दस 10 मिल रही है। जब बिजली आती भी है तो उसका आना-जाना लगा रहता है। ऐसा तकरीबन 2 महीने से हो रहा है। बिजली विभाग के अधिकारियों को भी कई बार मोबाइल पर सूचना दी गई लेकिन अधिकारियों का है कि, 33 केवी लाइन टूटी पड़ी है लाइन फाल्ट है, सुधार हुआ नहीं कई बार बोल दिया गया। आपका फेज़ चेंज कर देंगे, यह कहते है।

अब सवाल यह उठता है कि, आप कितनो का फेज़ बदलेंगे, पूरे गांव में से आधे गांव में लाइट रहती आधे गांव में लाइट नहीं रहती। तीन बार शिकायत लिखकर रजिस्टर में हस्ताक्षर में मोबाइल नंबर के साथ साइन भी की गई है लेकिन आज तक कोई सुधार नही हुआ। विद्युत विभाग के अधिकारी कर्मचारी मोबाइल तक उठाना उचित नहीं समझते, आपसी व्यवहार को तो देखते ही नही हैं। ग्रामीण क्षेत्र में सप्लाई रात भर रहती है लेकिन मुख्यालय पर बिजली गुल रहती है और ऑफिस पर कोई लाइन मेन नहीं मिलता। लेकिन लोगों की शिकायत है कि मीटर में लाइट बनी रहती है बल्ब नहीं जलता, बिजली का बिल हजारों में आता है, लाइट का आना-जाना उदयगढ़ में बना रहता है। बिजली विभाग के अधिकारी कर्मचारी अपनी विटामिन खुराक में लगे रहते हैं। मुख्यालय पर कोई भी ध्यान देने को तैयार नहीं है। अधिकारी को कई बार फोन लगाकर शिकायत करने पर स्थित के बारे में बताया जाता है लेकिन अधिकारी मुख्यालय पर रहने को तैयार नहीं है। जब भी फोन लगाया जाता है तो कहते है, मैं बाहर हूं मैं कल आऊंगा परसों आकर करवा दूंगा, यह बातें होती है। वहीं क्षेत्र में बिजली गुल होने से बहुत परेशानी होती है साथ ही रात में चोरी होने का डर लगता है।

गुलाबी ठंड का एहसास मनुष्य को ही नहीं अपित मूक पशुओं को भी

माही की गूंज, आम्बुआ। दीपावली का पर्व समाप्त होने के साथ क्षेत्र में अब तापमान में कमी आने लगी है। हल्की ठंड का एहसास होने लगा है। जिसका असर मूक प्राणी यानी कि पशुओं में भी देखना को मिल रहा है वह भी अलाव की गर्मी पसंद कर रहे हैं।

शारदीय नवरात्रि के बाद हल्की ठंड का असर दिखाई देने लगा है मगर इस बार मौसम में बार-बार होते रहे बदलाव के कारण दीपावली तक गर्मी जैसा मौसम बना रहा। मगर दीपोत्सव के बाद अब ठंड का हल्का एहसास होने लगा है। रात तथा सुबह ठंडी होने लगी है मगर दिन में अभी भी गर्मी का एहसास हो रहा है। ठंड का असर मानव जाति पर ही नहीं पशु पक्षियों पर भी होने लगा है जहां सुबह धूप में पक्षी धूप सेंकते नजर आ रहे हैं। वहीं जानवर भी जहां कहीं आग जलते देखते हैं तो तापने खड़े हो जाते हैं। ऐसा ही नजारा हमारे प्रतिनिधि ने सुबह तब अपने कमरे में कैद किया जब जलती आग के पास गोवंश खड़ा होकर आज की तपिश का आनंद ले रहे थे। इससे लगता है कि जानवरों को भी ठंड का एहसास होने लगा है।

अभी तक नहीं जागा प्रशासन, किसी की जान जाएगी तभी कुल्हाड़ी लेकर पहुंचेगा प्रशासन

बारिश के कारण गिरा पेड़ दुर्घटना को दे रहा आमंत्रण

माही की गूंज, चं.शे. आजाद नगर। आजाद नगर तहसील मुख्यालय से मात्र 6 से 7 किलोमीटर दूर स्थित दाहोद नेशनल हाईवे रोड से मालपुर और बरझर रोड पर बारिश के समय हथनी नदी पर बनी पुलिया के किनारे बबुल का पेड़ गिर गया था, जिसके बाद उसकी टहनियों को सही तरीके से नहीं काटने की वजह से बबुल के पेड़ की कुछ शाखाएं पुलिया के ऊपर आई हुई है और उससे किसी की भी वाहन की दुर्घटना हो सकती है और जन हानि होने की संभावना है। रोड और जब पुलिया से दो वाहन एक साथ गुजरते वक्त गलत साइड से ही गाड़ी निकलनी पड़ती है, टहनियों की वजह से गाड़ी गलत साइड से निकालते वक्त दूसरी ओर से आ रही गाड़ियों में गाड़ी टकराने की संभावना बनी रहती है। चुनावी दिनों में कई राजनेताओं और कई प्रधासनिक अधिकारी और कर्मचारियों की गाड़िया आती जाती रही है फिर भी किसी ने इस और ध्यान नही दिया। इस पेड़ से कोई भी वाहन इस पेड़ से टकरा सकता है और दुर्घटना हो सकती है और किसी भी आम नागरिक की जान जा सकती है। किसी भी परिवार का बड़ा नुकसान हो सकता है।

आंवला नवमीं पर अम्बे माता को छप्पन भोग के साथ अन्नकूट संपन्न

माही की गूंज, आम्बुआ।

विगत दिनों से धार्मिक स्थलों पर अन्नकूट महोत्सव मनाया जा रहा है। दीपावली के बाद यह आयोजन होते हैं। अन्नकूट का तात्पर्य हिंदू सनातन धर्म में वर्षा काल के चार माह में जिन खाद्य सामग्रियों का भोजन में निषेध किया गया है। वह सभी सामग्रियों को दीपोत्सव बाद सभी को एकत्र कर मिश्रित कर एक साथ बनाया जा कर देवी देवताओं को समर्पित कर यानी कि भोग लगाने के बाद प्रसादी के रूप में ग्रहण कर प्रतिदिन भोजन में वे सामग्रियां शामिल कर ली जाती है। इसी क्रम में तिथियों के अनुसार अन्नकूट मनाया जाता है। अमावस के बाद की पड़वा से यह कार्यक्रम जारी रहकर आंवला नवमी तक अन्नकूट मनाया जाता है।

आम्बुआ में टेकरी वाली अंबे माता तथा शिवालय प्रांगण में स्थित अंबे माता मंदिर में आंवला नवमी को अन्नकूट मनाया गया। टेकरी वाली अंबे माता मंदिर में मां पार्वती मेमोरियल स्कूल के संचालक माहेश्वरी परिवार द्वारा छप्पन भोग की प्रसादी माता जी को अर्पित की गई। इसी के साथ अन्नकूट की प्रसादी अर्पित कर पुजारी आत्माराम भूरिया ने महा आरती की तथा महा प्रसादी का वितरण किया गया शंकर मंदिर प्रांगण में दीपक रमेश राठौड़ द्वारा अन्नकूट का आयोजन किया गया।

आजादी के बाद भी काकड़बारी के कई फलियों में अभी तक नहीं पहुंचा विकास

सिंगड़िया फलिया और बामनिया फलिया में लोग आज भी कच्ची सड़क का उपयोग करने को मजबूर

माही की गूंज, चं.शे. आजाद नगर।

अलीराजपुर जिला आदिवासी बाहुल्य जिला है, जहा की एक बड़ी आबादी बड़े-बड़े पहाड़ों जंगलों और दूरस्थ गांवो में फलियों में निवास करती है। आजादी के 76 वर्षों बाद भी चंद्र शेखर आजाद नगर भाभरा तहसील मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर गुजरात बॉर्डर से सटे गांव काकड़बारी में सरकार का विकास अब तक नही पहुंच पाया है। जहा आज भी मुख्य सड़क के अंदर बड़े फलियों में जिसमे सिंगाड़िया फलिया से सिमाडा फलिया और बामनिया फलिया से सिंगाड़िया फलिया तक आने-जाने के लिए गिट्टी डाली गई सड़क और कच्ची सड़क का आदिवासी ग्रामीण उपयोग करते है। जिससे कभी भी दुर्घटना होने का अंदेशा बना रहता है। ग्राम सरपंच-सचिव और सहायक सचिव तथा प्रशासन किस नेता या जनप्रतिनिधि के दबाव में काम करते है यह तो आज तक ज्ञात नही हुआ। लेकिन गांव में भ्रमण करने के बाद गांव की सड़क स्थित बहुत ही खराब है और लोगो को आने-जाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जिससे आम आदिवासी ग्रामीणजन प्रशासन, सरपंच, पंच, सचिव और सहायक सचिव को कोसने के अलावा कुछ भी नही कर पाते है। गांव के कुछ दबंग लोगो की वजह से ही वह किसी भी अधिकारी और कर्मचारी को उसकी सूचना और सड़क निर्माण की शिकायत भी नही कर पाते। चुनावी सभाओं के दौरान कई नेता इस और गए भी होंगे लेकिन उनको अभी तक सड़क निर्माण के सिर्फ आश्वासन ही मिले है। सड़क का निर्माण होने से गांव का विकास होगा और गांव का विकास होगा तभी भारत का विकास होगा।

मतदान के बाद पार्टियों और प्रत्याशियों के गुणा-भाग का दौर, पार्टियों के अपने-अपने दावे

बढ़ा हुआ महिलाओं का मतदान प्रतिशत किसके पक्ष में जाएगा यह अब भी कोतुहल का विषय बना हुआ है

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मिल मंसूरी

पिछले तीन माह से चल रही चुनावी उठा पटक 17 नवम्बर के बाद शांत हो चुकी है। अब हर कोई मतदान प्रतिशत को लेकर गुणा-भाग करने में लगा हुआ है। हर पार्टी और हर प्रत्याशी का अपना एक अलग ही गणित है। जिसमें वे अपने आपको जीता हुआ मान रहे है। इस विधानसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत ने भी उथल-पुथल मचा कर रख दी है। हालांकि जिले में होने वाला मतदान 2018 में हुए मतदान से कुछ कम है। बावजूद इसके इस बार 2023 के विधानसभा मतदान का प्रतिशत सबकी धड़कने बढ़ाए हुए है। इस बार महिलाओं में अधिक उत्साह देखने को मिला है। महिला मतदाताओं के प्रतिशत में भी अच्छा खासा उछाल देखने को मिला है। महिला मतदाताओं के मतदान प्रतिशत में आए इस उछाल से भी राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों के गणित भी बनते-बिगड़ते दिखाई दे रहे है। मगर यह सब अब भी कयास मात्र ही है। पार्टियों और प्रत्याशियों के भाग्य का पिटारा तो 3 दिसम्बर को ही खुलेगा और उस समय जो होगा वही अंतिम निर्णय होगा।

वैसे जिले में विधानसभा चुनावों को लेकर जो मतदान प्रतिशत सामने आया है वह 2018 के विधानसभा चुनावों में हुए मतदान से कुछ कम है। मगर इस बार पूरे जिले में महिला मतदाताओं ने मतदान में अपनी महती भूमिका अदा की है। इस बार किए गए मतदान में महिलाओं ने भी हिस्सा लिया लेकिन जिले में महिला मतदाताओं की संख्या इस बार अधिक थी, बावजूद इसके मतदान में यह पुरूषों से कम ही रही पर महिलाओं के मतदान प्रतिशत में काफी बढ़ोतरी देखने को मिली है। महिलाओं के मतदान प्रतिशत ने चुनावी समीकरणों को असमंजस में लाकर खड़ा कर दिया है। यह कोई नहीं जानता की यह महिलाओं का बढ़ा हुआ मतदान प्रतिशत किस की झोली में जाएगा और किस वजह से जायगा। मगर यह तय है कि जिधर भी जाएगा उसकी नैया पार लगा जाएगा।

जिले में ऐसा रहा मतदान का प्रतिशत

जिले में मतदान की स्थिति पर अगर बात करें तो जहां 2018 में 78 प्रतिशत से अधिक इसका आंकड़ा था, वह इस बार 2023 के विधानसभा चुनावों के मतदान में लगभग दो प्रतिशत घट कर 76 प्रतिशत से अधिक पर जाकर रूक गया। हालांकि मतदान का यह प्रतिशत घटने के बावजूद अच्छा ही कहा जाएगा। 2023 के इस विधानसभा चुनाव में जिले का मतदान का प्रतिशत औसत 76.72 रहा है। जिले में कुल 8 लाख 64 हजार 435 मतदात है। इनमें 4 लाख 29 हजार 850 पुरूष मतदाता है तो 4 लाख 34 हजार 553 महिला मतदाता है। इस बार के विधानसभा चुनावों के हुए मतदान में इनकी भागीदारी कुछ इस तरह से रही कि, 4 लाख 29 हजार 850 पुरूष मतदाताओं में से 3 लाख 34 हजार 243 ने अपने मत का उपयोग किया। जबकि 4 लाख 34 हजार 553 महिला मतदाताओं में से 3 लाख 29 हजार 29 महिलाएं ही अपने मत का उपयोग कर पाई है। जबकि महिला मतदाताओं की संख्या इस बार पुरूषों से अधिक थी और ऐसा पहली बार हुआ है। बावजूद महिलाओं के मतदान के इस आंकड़े को देखा जाए तो यह पिछले चुनावों से काफी अधिक है।

विधानसभावार प्रतिशत में यह रही स्थिति

2023 में जिले की तीन विधानसभा में हुए मतदान की अगर प्रतिशत देखी जाए तो लगभग यह आंकड़ा 2018 के विधानसभा चुनावों में हुए मतदान से कुछ अलग तो दिखाई नहीं पड़ता। जिले की झाबुआ विधानसभा में 2018 में मतदान का प्रतिशत 65.26 रहा था। जबकि इस बार 2023 के विधानसभा चुनावों में यह आंकड़ा 65.61 प्रतिशत रहा है। जबकि झाबुआ विधानसभा के लिए 2019 में हुए उपचुनाव में यह आंकड़ा महज 61.91 प्रतिशत ही रहा था। इस लिहाज से झाबुआ विधानसभा में मतदान का प्रतिशत लगभग 4 प्रतिशत तक बढ़ा है। 2018 के विधानसभा चुनावों में पेटलावद विधानसभा में 80.55 प्रतिशत मतदान हुआ था, जबकि इस बार इसमें लगभग एक प्रतिशत से अधिक की गिरावट हुई और इस बार का मतदान प्रतिशत 79.39 रहा है। जिले की थांदला विधानसभा में 2018 में 87.54 प्रतिशत मतदान हुआ था, जबकि 2023 में यहां इस बार हल्की सी कमी देखी गई और यहां का मतदान 86.95 प्रतिशत हुआ है। जिले की तीनों विधानसभाओं के आंकड़े लगभग 2018 की तरह ही नजर आ रहे है।

प्रशासन की मतदान प्रतिशत बढ़ाने की योजना....?

जिला प्रशासन चुनाव के बहुत पहले से ही मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर हल्लाबोल कर दिया था। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर नित नई योजनाएं बनाई गई। मतदान प्रतिशत बढ़ाने की इस योजना में सबसे बड़ा काम जो था। वह पलायन पर गए मजदूरों को मतदान के लिए वापस जिले में लाना था। वैसे से जिले में लाखों की आबादी मजदूरी के लिए पलायन करती है, लेकिन यहां प्रशासन बिलकुल पिछड़ा हुआ नजर आया। पलायन पर गई लाखों की आबादी की प्रशासन के पास कोई जानकारी नहीं थी। महज कुछ हजार पलायन पर गए मजदूरों की सूची ही प्रशासन के पास थी। जिसे खाना पुर्ति के लिए प्रशासन ने इस्तेमाल किया। इस सूची से जिला मुख्यालय पर बने कंट्रोल रूम से मजदूरों को फोन तो किए गए लेकिन प्रशासन इन मजदूर मतदाताओं के सवालों के जवाब तक नहीं दे पाया। वह तो भला हो कि मतदान के तुरंत पहले दीपावली का त्यौहार था, सो मजदूर भी त्यौहार करने घर को लौट आए थे। वरना प्रशासन को मतदान प्रतिशत बढ़ाने की कवायदों में मुंह की खानी पड़ती। कुल मिलाकर प्रशासन किसी भी तरह से मतदान प्रतिशत बढ़ाने में कायमयाब तो नहीं हो पाया है। क्योंकि आंकड़े बताते है कि, इस बार का मतदान प्रतिशत लगभग 2018 के विधानसभा चुनावों में हुए मतदान प्रतिशत के लगभग ही है।

महिलाओं के बढ़े मतदान प्रतिशत ने डाल दिया असमंजस मे

2018 और 2023 की इस मतदान प्रतिशत की समानता को देखते हुए भी राजनीतिक पार्टियां, प्रत्याशी और आमजन कई तरह के कयास लगा रहे है। अब 3 दिसम्बर को ही यह तय हो पाएगा कि, लगाए जा रहे यह सारे कयास कितने सफल हो पाएंगे। मगर तीनों ही विधानसभाओं में महिलाओं के बढ़े मतदान प्रतिशत ने सबको असमंजस में डाल दिया है। महिलाओं के बढ़े इस मतदान प्रतिशत के इस फेक्टर के भी कई अनुमान लगाए जा रहे है। राजनीतिक पार्टियां इसे सरकारी योजनाओं और चुनावी वादों को लेकर देख रही है। दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दल का मायना अपने से जोड़कर देख रहे है।

योजनाओं का लाभ और वादे

भाजपा द्वारा सरकार की लाडली बहना योजना को इस बार विधानसभा चुनाव में महिला मतदाताओं के बढ़े प्रतिशत का कारण माना जा रहा है। मगर आंकड़े इसके कुछ अलग ही गणित बता रहे है। क्योंकि जिले में लाडली बहना योजना से जुड़ी महिलाओं की संख्या लगभग दो लाख है और इस बार जिले में सवा तीन लाख से अधिक महिलाओं ने अपने मत का उपयोग किया है। आंकड़ों के हिसाब से यह आंकलन करना कि, लाडली बहना योजना महिलाओं के मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी का करण है सही तो नहीं होगा। वहीं कांग्रेस इसे महिलाओं से किए गए चुनावी वादे का कारण मान रही है। इसमें वह नारी सम्मान योजना की घोषणा, 500 रुपये में गैस सिलेंडर और 100 युनिट मुफ्त बिजली की घोषणा को कारण मान रही है।

कुल मिलाकर अब जो चल रहा है वह मतदान के बाद पार्टियों व प्रत्याशियों के गुणा-भाग का दौर है और इस दौर में दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दल अपने-अपने दावे कर रहे है। मगर जिले में महिला मतदाताओं के बढ़े मतदान प्रतिशत ने कोतुहल का विषय खड़ा कर दिया है। अब यह तो 3 दिसम्बर को खुलने वाला पिटारा ही बताएगा कि, महिलाओं का बढ़ा हुआ मतदान प्रतिशत किस को कहां लेकर जाएगा।

संदिग्ध अवस्था में मिला महिला का शव, पुलिस जांच में आया हुई हत्या, पीएम के बाद देवर के सुपुर्द किया शव

माही की गूंज, खवासा।

सोमवार सुबह खवासा पुलिस को सूचना मिली कि, नरसिंहपाड़ा के चीरवा फॉरेस्ट में एक महिला का शव संदिग्ध व नग्न अवस्था में पड़ा है। ग्रामीणों की सूचना पर खवासा चोकी प्रभारी रज्जत सिंह गणावा एवं स्टाफ के मौके पर पहुंचने के बाद, थांदला एसडीओपी रवि राठी भी अपने दल के साथ मामले की गंभीरता के साथ मौके पर पहुंचे और शव की शिनाख्त कर शव को पुलिस ने अपने कब्जे में लिया। महिला के पति की करीब तीन वर्ष पूर्व मोत हो गई थी। जानकारी अनुसार 38 वर्षिय उक्त महिला बोरवा निवासी होकर पति की मौत के बाद 5 बच्चो की मॉ यह महिला अपने दो छोटे बच्चो को लेकर एक वर्ष पूर्व अपने पति का घर छोडकर आ गई थी जो खवासा चौकी क्षेत्र के ग्राम भमरिया निवासी किसी देवचंद गरवाल के साथ प्रेम प्रसंग होकर रहना बताया जा रहा है। शव के पास से महिला के मिले बेग से महिला के आधार कार्ड के साथ देवचंद्र का भी आधार कार्ड मिला है। पुलिस ने फोरेसिंक रिपोंट के साथ अब तक हर बिंदूओ पर जांच कर महिला की हत्या किया जाना

सामने आया है और पूलिस जल्द ही इस हत्या का खुलासा भी कर देगी। फिलहाल चौकी प्रभारी रज्जतसिंह गणावा ने बताया, महिला के शरीर में गले, चहरे, घुटने आदि कई जगह खरोच के निशान थें। यह मामला आत्म हत्या का नही बल्की हत्या का ही है। पूलिस जल्द ही जांच में हत्यारो तक पहुच कर मामले में हत्यारो का खुलासा करेगी।

माही नहर के पानी के लिए किसानों ने मेंन नहर पर किया आंदोलन

माही की गूंज, सारंगी। संजय उपाध्याय

रवी सीजन की गेहूं, चना फसलों की बुवाई में जुटे किसानों को पानी के लिए तरसना पड़ रहा है। किसानों ने पानी के लिए मोहनपुरा फटा मेंन नहर पर आंदोलन किया। उसके बाद प्रशासन जागा और छोटी नहर में पानी दिया। 8 नवंबर को मैंन नहर खोल दी गई थी लेकिन किसानों को आंदोलन करने के बाद ही छोटी नहर में पानी दिया गया। किसानों का कहना है कि, 20 दिन बाद में आंदोलन के बाद पानी दिया गया। जब हम गेहूं की बुवाई करेंगे। फसले पकने की तैयार में होगी तब आखरी में पानी की कमी के कारण माही के अधिकारियों द्वारा नहर बंद कर दी जाती है। जिससे उपज में कमी होती है। पहले नहर का संचालन नहर जल उपभोक्ता समितियां के द्वारा संचालन किया जाता था लेकिन करीब 3 वर्षों से जल उपभोक्ता समितियां के चुनाव नहीं हुए हैं जिससे नहर का संचालन माही नहर के अधिकारियों के ऊपर रहता है। अधिकारियों द्वारा मनमानी के तहत नहर का संचालन किया जाता हैं। जल उपभोक्ता समिति के चुनाव नहीं होने के कारण व्यवस्था गड़बड़ा रही है। किसानों ने बताया की अगर नहर का संचालन व्यवस्थित ढंग से नहीं होता है तो किसान बड़े आंदोलन की तैयारी कर रहे है जिसकी समस्त जवाबदारी माही प्रशासन के अधिकारियों की रहेगी। पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह राठौर, जल उपभोक्ता संस्था के पूर्व अध्यक्ष अग्निनारायण सिंह राठौर, हर्षवर्धन सिंह राठौर, जनपद सदस्य रजनीश पाटीदार, जगदीश निनामा आदि

कई किसानों का कहना है अगर प्रशासन ने इस और ध्यान नहीं दिया तो मजबूरन किसानों को बड़े आंदोलन की ओर बढ़ना पड़ेगा। गूंज ने जब एसडीओ झाबुआ से बात की उन्होंने बताया 12-12 दिन के टर्न में दोनों तरफ नहर का पानी दिया जाएगा। जब नहर की सफाई के बारे में पूछा उन्होंने कहा पानी नहर में छोड़ दिया गया है पानी के तेज बहाव से नहर साफ हो जाएगी किसानों को व्यवस्थित रूप से पानी मिलेगा।

आचार सहिंता की आड़ में अतिक्रमण धड़ल्ले से हो रहा, बिना परमिशन चल रहा निर्माण कार्य

महिलाओं को आगे कर विवाद करते अतिक्रमणकर्ता, पूर्व में भी हो चुका है विवाद

माही की गूंज, बामनिया। गौरव भण्डारी

अभी कुछ दिनों पूर्व ही प्रशासन ने बामनिया के रतलाम रोड स्थित शासकीय सर्वे नम्बर 105 पर बड़ी कार्यवाही करते हुए पक्का अतिक्रमण धराशाई किया था। प्रशासन की कार्यवाही के बाद भी अतिक्रमणकर्ताओ में किसी भी प्रकार का खौफ़ नही है और आज भी पटवारी हल्का नम्बर 01 में आबादी भूमि पर अतिक्रमण जारी है। यहां नगर के रतलाम रोड से होकर मेला ग्राउंड में शासकीय अस्पताल के सामने खाली पड़ी सरकारी भूमि पर अवैध रूप से पक्का अतिक्रमण करने का कार्य किया जा रहा है। उक्त भूमि के पीछे निजी भूमि लगी हुई है जिसमे आने-जाने का रास्ता पूरी तरह से बन्द कर दिया गया है।

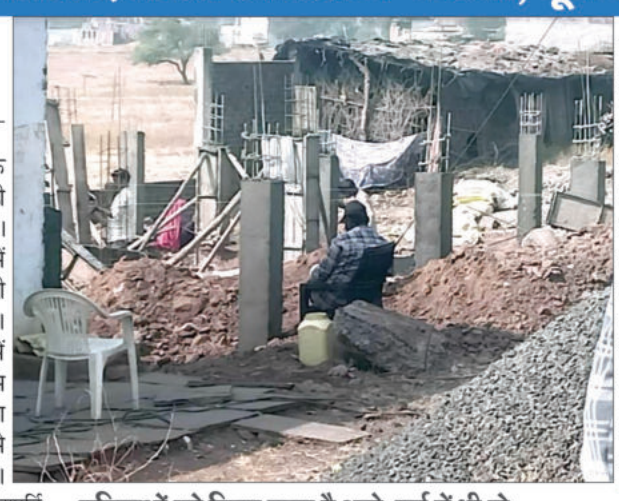

शिकायत के बाद पटवारी मौका पंचनामा बनाकर खानापूर्ति कर लौट आये और किसी प्रकार के निर्माण को बन्द किये बिना ही लौट गये। इस संबंध में जब ग्राम पंचायत सचिव मन्नालाल अरड से जानकारी ली तो उन्होंने भी किसी भी प्रकार से निर्माण कार्य की कोई अनुमति नही होने की बात कही। अवैध निर्माण कार्य नही रोके जाने पर सचिव ने कहा कि, तहसीलदार महोदय द्वारा कार्य रोके जाने का आदेश जारी किया जाएगा।

महिलाओं को किया जाता है आगे, पूर्व में भी हो चुका है बड़ा विवाद

असल मे पूरा विवाद शासकीय सर्वे नम्बर 110 की भूमि से लगी निजी भूमि से जुड़ा हुआ है। उक्त निजी भूमि अलग-अलग लोगो को खरीदी-बेची जा रही है और जब भी कोई नया मालिक निजी भूमि का आता उससे वसुली के लिए इस भूमि पर अतिक्रमण का कार्य शुरू हो जाता है जिससे निपटने के लिए लेन-देन होता है। जब भी भूमि मालिक जमीन के आगे से अतिक्रमण को रोकने पहुँचते या प्रशासन की ओर कोई जबाबदार आता है तो अतिक्रमणकर्ता महिलाओं को आगे कर विवाद-झगड़ा करते है। पूर्व में इस भूमि पर अतिक्रमण को लेकर बड़ा विवाद हो चुका है और पुलिस प्रकरण भी बन चुका है। इस बार अतिक्रमणकर्ताओ ने अवैध रूप से पक्का अतिक्रमण शुरू कर दिया। मामले की शिकायत पुलिस चौकी बामनिया और सीएम हेल्पलाइन पर की जा चुकी हैं।

आचार सहिता की आड़ में किया जा रहा अतिक्रमण

विधानसभा चुनाव को लेकर प्रदेश में आचार सहिंता लगी हुई है। यहां प्रशासन की चुनावी कार्यक्रम में व्यस्तता का फायदा उठाते हुए। दिन-रात अवैध अतिक्रमण का कार्य किया जा रहा है। कुछ दिनों पूर्व ही नगर से बड़ा अतिक्रमण हटाने वाला प्रशासन, अब शिकायत के बाद राजस्व विभाग क्या कदम उठाता है ये देखना होगा।

22 दिन से घर से गायब नाबालिग के लिए परेशान परिवार, पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज कर की इतिश्री

अंचल की नाबालिग बच्चियां लगातार हो रही भांझगड़ी प्रथा का शिकार

माही की गूंज, पेटलावद।

अंचल में लगातार नाबालिक लड़कियों के गायब होने के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। लगातार क्षेत्र में हावी होती भांझगड़ी प्रथा के चलते ऐसे गम्भीर मामलों में पुलिस, सख्त कानून होने के बाद भी समझौते और भांझगड़ी के चक्कर मे अपराध तक दर्ज नही करती है। और जब समझौता नही होता तो अपहरण और गुमशुदगी दर्ज कर मामले के आपसी निपटारे के प्रयास किये जाते हैं। अपराध दर्ज भी हो जाते है तो इन मामलों में क्या होता है इसकी कोई जानकारी नही मिल पाती है। पर नाबालिग के प्रति बढ़ते अपराधों की पोल खुद पुलिस रिकॉर्ड खोल देगा, जहा नाबालिग के अपहरण के सेकड़ो मामले दर्ज है। जिनके कोई अपराधी आज तक नही बन पाये है। ऐसा मामला रायपुरिया थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत बरवेट के ग्राम आमलीरुण्डा से सामने आया है। जहां पुलिस ने नाबालिग के घर से गायब होने के मामले को गंभीरता से न लेते हुए अपराध दर्ज करने में 15 दिन लगा दिए और अपराध दर्ज होने के 22 दिन बाद भी पीड़ित का पिता और परिवार लड़की से नही मिल पाया है। सबसे बड़ी बात पीड़ित के पिता द्वारा थाने में नामजद रिपोर्ट दर्ज करवाई है। ग्राम आमलीरुण्डा के वागमल ने थाना रायपुरिया में आवेदन देकर ग्राम तीखी निवासी राहुल पर नाबालिक लड़की को जबरन अपहरण करने का आरोप लगाया। पुलिस ने पीड़ित पिता की शिकायत दर्ज नही की लेकिन 18 नवम्बर को आरोपी पक्ष के पिता ने नाबालिग के पिता को धमकाते हुए जान से मारने ओर दूसरी औरत से फसाने की धमकी दे डाली। जिसकी शिकायत 19 नवम्बर को होने के बाद 20 नवम्बर को नाबालिक के अपहरण का मामला दर्ज किया गया। क्षेत्र में लगातार इस प्रकार के अपराधों में बढ़ोतरी होती जा रही है और कई बार नाबालिग लडकिया बड़े अपराध और प्रताड़ना का शिकार भी हो जाती है। लेकिन समझौते व भांझगड़ी से होने वाले निराकरण के चलते मामले सामने नही आते या दबा दिए जाते है।

22 दिनों से परेशान नाबालिक के पिता ने बताया कि, रायपुरिया पुलिस उसकी नाबालिग लड़की की खोजबीन करने और आरोपी पक्ष पर कार्रवाई करने में रुचि नही दिखा रही है। जिस कारण मेरी नाबालिग बेटी का जीवन खतरे में पड़ गया है। नाबालिग के पिता ने लड़की को आरोपी पक्ष से छुड़वा कर परिवार के सुपुर्द कर आरोपी पक्ष पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422